

ЎЗБЕКИСТОН RESPUBLIKASI UMUMIY URTA TA'ALIM MUASSASALARINING 2002-2003 UQUV YILIGA MULJALLANGAN UQUV REJASI

| T\p | Ўқув фанлари | Синфлар | | | | | | | | | Умумий | Харакатдаги дастур | Хафта. Умумий соат | Жами йиллик соатлар | |
|-----|---|---------------------|----|----|----|----|----|----|----|----|--------|--------------------|--------------------|---------------------|-------|
| | | Янги дастур асосида | | | | | | | | | | | | | |
| | | 1 | 2 | 3 | 4 | 5 | 6 | 7 | 8 | 9 | | 10 | 11 | | |
| | Давлат ихтиёридаги соатлар | 20 | 22 | 24 | 24 | 30 | 32 | 33 | 34 | 35 | 254 | 36 | 36 | 72 | 11064 |
| 1. | Ўзбек тили | | 2 | 2 | 2 | 2 | 2 | 2 | 2 | 2 | 16 | 2 | 2 | 4 | 680 |
| 2. | Она тили ва адабиёт | 8 | 8 | 10 | 10 | 9 | 7 | 5 | 5 | 5 | 67 | 5 | 5 | 10 | 2610 |
| 3. | Хорижий тил | | | | | 3 | 3 | 3 | 3 | 3 | 15 | 2 | 2 | 4 | 646 |
| 4. | Тарих | | | | | 2 | 2 | 3 | 3 | 3 | 13 | 4 | 4 | 8 | 714 |
| 5. | Давлат ва ҳуқуқ асослари | | | | | | | | 1 | 1 | 2 | | | | 68 |
| 6. | Инсон ва жамият | | | | | | | | | | | 1 | 1 | | 34 |
| 7. | Иқтисодий билим асослари | | | | | | | | 1 | 1 | 2 | 1 | 1 | 2 | 136 |
| 8. | Математика | 5 | 5 | 5 | 5 | 5 | 5 | 5 | 5 | 5 | 45 | 5 | 4 | 9 | 1831 |
| 9. | Информатика | | | | | | | | 1 | 2 | 3 | 2 | 2 | 4 | 238 |
| 10. | Физика, астрономия | | | | | | 2 | 2 | 2 | 2 | 8 | 4 | 5 | 9 | 578 |
| 11. | Кимё | | | | | | | 2 | 2 | 2 | 6 | 2 | 2 | 4 | 340 |
| 12. | Биология | | | | | 1 | 2 | 2 | 2 | 2 | 9 | 1 | 2 | 3 | 408 |
| 13. | Табиёт ва география | 1 | 1 | 1 | 1 | 1 | 2 | 2 | 2 | 2 | 13 | 2 | 2 | | 509 |
| 14. | Одобнома | 1 | 1 | 1 | 1 | | | | | | 4 | | | | 135 |
| 15. | Ватан туйғуси | | | | | 1 | 1 | | | | 2 | | | | 68 |
| 16. | Миллий истиқлол ғояси ва маънавият асослари | | | | | | | | 1 | 1 | 3 | | | | 102 |
| 17. | Мусиқа маданияти | 1 | 1 | 1 | 1 | 1 | 1 | 1 | 1 | | 7 | | | | 237 |
| 18. | Тасвирий санъат | 1 | 1 | 1 | 1 | 1 | 1 | 1 | 1 | | 7 | | | | 237 |
| 19. | Чизмачилик | | | | | | | | 1 | 1 | 2 | | | | 68 |
| 20. | Меҳнат | 1 | 1 | 1 | 1 | 2 | 2 | 2 | 1 | 1 | 12 | 2 | 2 | 4 | 543 |
| 21. | Жисмоний тарбия | 2 | 2 | 2 | 2 | 2 | 2 | 2 | 2 | 2 | 18 | 2 | 2 | 4 | 746 |
| 22. | Чақириқча ёшларни тайёрлаш | | | | | | | | | | | 2 | 2 | 4 | 136 |
| | Мактаб ихтиёридаги соатлар | 2 | 2 | 2 | 2 | 2 | 2 | 2 | 2 | 2 | 18 | 3 | 3 | 6 | 814 |
| | Умумий соатлар | 22 | 24 | 26 | 26 | 32 | 34 | 35 | 36 | 37 | 272 | 39 | 39 | 78 | 11878 |
| | Амалий меҳнат машғулотлари (кун ҳисобида) | | | | | 6 | 6 | 10 | 16 | | | 20 | | | |

ЎЗБЕКИСТОН RESPUBLIKASI UMUMIY URTA TA'ALIM MUASSASALARINING 2002-2003 UQUV YILIGA MULJALLANGAN UQUV REJASIGA TUSHUNTIIRISH XATI

Ўқув режа Ўзбекистон Республикасининг "Таълим тўғрисида"ги Қонуни, "Кадрлар тайёрлаш миллий дастури" ва Соғлиқни сақлаш вазирлигининг кўрсатмалари ҳамда Ўзбекистон Республикаси Вазирлар Маҳкамасининг 1999 йил 16 августдаги 390-сонли қарори билан тасдиқланган "Умумий ўрта таълимнинг давлат таълим стандартлари" асосида тузилган.

Ўқув режа ўтиш даврига мўлжалланган бўлиб, бунда 2002-2003 ўқув йилида I-IX синфларнинг янги дастур, X-XI синфларнинг амалдаги дастур асосида ўқитилиши режалаштирилган.

Ўқув режа таркибан давлат ва мактаб компонентларидан иборатдир.

Давлат компонентига ажратилган фанлар Давлат таълим стандартлари асосида тузилган дастурларга биноан ўқитилади.

1. Таълим ўзбек тилида олиб бориладиган мактабларда рус тили фани ўзбек тили фани ўрнида ўқитилади. Таълим қорақалпоқ, қозоқ, қирғиз, тожик ва туркман тилларида олиб бориладиган мактабларда рус тили фани ўқувчилар ва уларнинг ота-оналари хоҳишига қараб, она тили ва адабиётдан III-IV синфларда 2 соатдан, V-XI синфларда хорижий тилдан 1 соатдан, она тили ва адабиётдан 1 соатдан олиниб, жами 2 соат ҳисобида 3-синфдан бошлаб ўқитилиши мумкин. Мактаб педагогика кенгаши қарорига асосан мазкур тиллар (Ўзбек ва рус тиллари)ни чуқур ўрганиш учун давлат ва мактаб компонентларидаги соатлардан қўшимча фойдаланиши мумкин.

2. Ўзбекистон Республикаси Президентининг 2001 йил 18 январдаги "Миллий истиқлол ғояси: асосий тушунча ва тамойиллар" фани бўйича таълим дастурларини яратиш ва Республика таълим тизимида жорий этиш тўғрисида"ги Ф-1331-сонли фармойиши асосида X-XI синфларда "Миллий истиқлол ғояси: асосий тушунча ва тамойиллар" курси мактаб компоненти ҳисобидан ҳар бир синфда 17 соатдан ўқитилади.

3. Динлар тарихи бўйича дастлабки умумий тушунча ва билимлар Одобнома (I-IV), Атрофимиздаги олам (I-IV), Миллий истиқлол ғояси ва маънавият асослари (IX синф), Тарих (V-IX синф), Адабиёт (VIII-IX) ўқув фанлари таркибида тегишли дарс мавзуларидан ўрганилади. IX синфда эса "Дунё дин-

лари тарихи" курси мактаб ихтиёридаги соатлардан ҳафтасига 1 соат ажратилиб, ўқув йили давомида 34 соат ўқитилади. Бундан ташқари 8-синфлардаги тарбиявий соатларда 12 соатли дастур асосида "Ҳадис илми сабоқлари" ўрганилади.

4. I-IV синфларда ўтказиладиган жисмоний тарбия дарсларида назарий материал сифатида "Ўзбекистон ифтихорлари" кўлланмасидан ҳам фойдаланилади (бу курс юқори синфларда жисмоний тарбия дарсларида ҳам ўқитилиши мақсадга мувофиқдир).

5. Ўзбекистон Республикаси Президентининг 2001 йил 4 январдаги "Ўзбекистон Республикаси Конституциясини ўрганиши ташкил этиш тўғрисида"ги Ф-1322-сонли фармойиши асосида I-IV синфларда "Конституция асослари" курси "Одобнома" ва бошқа ўқув фанлари таркибида жами 10 соатдан ўрганилади;

V-VII синфларда "Конституция оламига саёат" курси, X-XI синфларда "Ҳуқуқшунослик" курси ҳар бир синфда 17 соатдан мактаб компоненти ҳисобидан ўқитилади, бу машғулотлар мактаб дарс жадвалига киритилиши ва синф журналида алоҳида бет ажратилиши лозим. Ушбу курс махсус малака ошириш курсидан ўтган мутахассис ўқитувчи томонидан ўтилади.

6. "Иқтисодий билим асослари":
*I-IV синфларда "Иқтисод асослари" курсининг ўқув материаллари она тили, ўқиш, математика фанлари таркибида;
*V-VII синфларда "Иқтисод сабоқлари" ўқув курслари она тили, хорижий тиллар, математика, география ва меҳнат таълими фанлари таркибида, VIII-XI синфларда эса алоҳида фан сифатида ўқитилади.

7. V синфдаги биология дарсида 2002 йилда "Ўқитувчи" нашриётида чоп этиладиган "Ботаника" (V-VI синф) дарслигидан 34 соатга мўлжалланган мавзулар, VI синфда эса ушбу дарсликнинг давоми тўлиқ ва IV чоракда 14 соат "Зоология" курси ўрганилади. VII синфда "Зоология" курси (68 соат) тўлиқ ўрганилади. VIII синфда "Одам ва унинг саломатлиги" (68 соат), IX синфда "Биология" (Цитология ва генетика асослари) курси ўрганилади. X-XI синфларда амалдаги дастур ва дарсликлар асосида ўқитилади.

8. "Табиат" фани бошланғич синфларда "Атрофимиздаги олам" ва "Табиатшунослик"

курсларини ўз ичига олади. География фани V-X синфларда ўқитилиб, V синфга ажратилган ҳафталик 1 соатда "Табиий география" бошланғич курси ўтилади. Бунда V синфлар учун мўлжалланган "Табиий география бошланғич курси" ("Ўқитувчи", 2001 й.) ўқув кўлланмасидан фойдаланилади. VI синфда 68 соат давомида "Материк ва океанлар табиий географияси", VII синфда "Ўрта Осиё табиий географияси", биринчи ярим йилликда (34 соат) ва иккинчи ярим йилликда "Ўзбекистон табиий географияси" ўқитилади, VIII синфда "Ўзбекистон иқтисодий ижтимоий географияси", IX синфда "Жаҳон иқтисодий ижтимоий географияси" ўқув дастури ва дарслиги асосида ўқитилади.

9. 2001-2002 ўқув йилидан бошлаб "Чизмачилик" фани VIII синфларда давлат таълим стандартлари асосида янги дастур бўйича ўқитила бошланди, 2002-2003 ўқув йилида мазкур фanning IX синфларда янги дастур ва дарсликлар асосида ўқитилиши давом эттирилади.

10. Барча турдаги таълим муассасаларида таянч ўқув режаси якуний юклама бўйича давлат томонидан тўлиқ молиялаштирилади.

Факультатив, яққа, гуруҳ машғулотлари фанларнинг хусусиятларига қўра, ўрнатилган тартибда ўтказилади.

11. Мактаб кенгаши қарори асосида ҳар бир синф учун давлат компонентидаги фанларга ажратилган соатларни ўқув дастурини бажариш шарти билан 15 фоиздан ошмаган ҳолда қисқартириб айрим фанлар чуқур ўқитиладиган синфлар, ихтисосликка йўналтирилган мактабларга мустақил (вариатив) ўқув режаларни тузиш ҳуқуқи берилади. Мазкур мактабларнинг VIII-XI синфлардаги "Меҳнат" дарс соатлари чуқур ўрганилаётган фанларнинг амалиётида қўлланиши ва шу соҳа бўйича касб ихтисослигига йўналтириш учун берилади. Бу ўқув режани Қорақалпоғистон Республикаси Халқ таълими вазирлиги, вилоят халқ таълими бошқармалари ва Тошкент шаҳар халқ таълими Бош бошқармаси тасдиқлайди. Лекин ҳар бир синф учун мўлжалланган жами ҳафталик соатлар ҳажми мазкур ўқув режада кўрсатилган миқдордан ошмаслиги лозим.

12. I-VIII синфларда "Йўл ҳаракати

қоидалари"ни ўрганиш учун ҳар бир синфга мактаб компоненти ҳисобидан йилига 17 соатдан ажратилади. I-IV синфларда бошланғич синф ўқитувчилари, V-VIII синфларда махсус курсдан ўтган мутахассис ўқитувчи томонидан ўтилади. Бу машғулотлар мактаб дарс жадвалига киритилиши ва синф журналида алоҳида бет ажратилиб, ўқувчилар билими баҳолалини шарт.

13. Ўқувчиларни оилавий ҳаётга тайёрлаш мақсадида Соғлиқни сақлаш вазирлиги билан ҳамкорликда яратилган "Соғлом авлод асослари" дастуридан I-IV синфларда "Одобнома" дарсида тегишли мавзуларда фойдаланилади.

V-VIII синфларда ушбу дастур асосида ўқитиш мактаб компоненти ҳисобидаги соатдан фойдаланган ҳолда ташкил этилади (17 соат); IX синфдан ундан "Одам ва унинг саломатлиги" фани таркибида тегишли мавзуларда фойдаланилади; Вазирлар Маҳкамасининг 2002 йил 25 январдаги 32-сонли қарорига мувофиқ, X-XI синфларда мактаб компонентида 17 соатдан фойдаланган ҳолда "Соғлом оила ва никоҳ, соғлом авлод туғилиши ва уни тарбиялаш масалалари" бўйича мутахассис табиий ходимлар томонидан ўтказиладиган махсус факультатив дарслар ташкил этилади (республика Таълим маркази томонидан ишлаб чиқилган тавсиянома ва дастурлар асосида).

14. "Инсон хавфсизлиги асослари" машғулотлари I-IV синфларда жисмоний тарбия фани таркибида 6 соатдан, V-VII синфларда "Умумий биология" ва VIII-IX синфларда "Кимё" фанлари дастурлари таркибида 8 соатдан ўқитилади.

15. Малакали ўқитувчиларга ва зарур шароитларга эга бўлган умумий ўрта таълим мактабларида — шаҳар мактабларида синфдаги ўқувчиларнинг сони 25 ва ундан ортиқ, қишлоқ мактаби синфларида 20 ва ундан ортиқ бўлган тақдирда кўйидаги фанларни ўқитишда синфлар гуруҳларга бўлинади:

*II-XI синфларда хорижий (инглиз, немис, француз ва бошқа) тиллар дарсларини ўтишда;

*таълим ўзбек тилида олиб борилмайдиган мактабларнинг II-XI синфларида ўзбек тили дарсини ўтишда;

*таълим рус тилида олиб борилмайдиган мактабларнинг II-XI синфларида рус тили дарсини ўтишда;

*VIII-XI синфларда "Информатика" фани дарсларини ўтишда;

*VIII-XI синфларда жисмоний тарбия дарсларини ўтишда (ҳар бир гуруҳда йигит ва қизлар саккиз нафардан кам бўлмаса);

*V-VII, X-XI синфларда меҳнат дарсларини ўтишда.

Мактаб компонентида ажратилган соатлар юқоридаги фанларни чуқурлаштириб ўқитиш мақсадида берилганда синфлар гуруҳларга бўлиб ўқитилади (маҳаллий молия органлари билан келишган ҳолда);

16. Мактаб компонентида ажратилган соатлар факультатив ва ўқувчиларнинг қизиқишларига қўра, ижодий қобилиятини ўстирувчи яққа, гуруҳ машғулотларига ҳамда ихтисослаштирилган таълимни ташкил қилишга ажратилади.

Мактаб ихтиёрига берилган соатларни ўтишда Ўзбекистон Республикаси Халқ таълими вазирлигининг хайъат мажлиси қарори билан тавсия этган дастур ва кўлланмалар ёки мактаб методика бирлашмалари ҳамда мутахассислар ҳамкорлигида яратилиб, республика Таълим маркази томонидан тасдиқланган алоҳида дастур ва кўлланмаларни жорий қилиш мумкин.

17. Мазкур ҳужжатнинг 11 ва 16-бандларига қўра, муассаса ўқув режаси бўйича мустақил тайёрланган дастур ва кўлланмалар Қорақалпоғистон Республикаси ўқув методика маркази, Тошкент шаҳар, вилоят педагогларни қайта тайёрлаш ва малакасини ошириш институтлари илмий-методика кенгашилари тавсияномаси асосида, республика Таълим марказига тасдиқлашга берилади. Бунда ўқувчиларнинг хоҳиш-истакларидан ташқари, малакали мутахассислар ва ўқув моддий базанинг мавжудлиги ҳақидаги маълумот ҳамда мактаб кенгашининг қарори бўлиши шарт.

18. Таълим қорақалпоқ, рус, қозоқ, тожик, қирғиз, туркман тилларида олиб борилмайдиган мактабларда мактаб кенгашининг қарорига биноан, айрим фанлар ва курсларнинг ўзбек тили (давлат тили)да ўқитилиши тавсия этилади.

19. Мазкур ўқув режадаги таълим меъёри Соғлиқни сақлаш вазирлигининг тавсиясига биноан, биринчи синфда 33 ҳафта, II-XI синфларда 34 ҳафта белгиланган. Мактабда ўқув машғулотлари 2 сентябрдан бошланади ва барча синфларда 25 майда тугалланади. Ўқув йили мобайнида таътиллар: кузги таътил 4 ноябрдан 11 ноябргача; қишки таътил - 31 декабрдан 10 январгача; баҳорги таътил - 22 мартдан 31 мартгача; ёзги таътил - ўқув йили (имтиҳонлар) тугаган кундан бошлаб 31 августгача давом этади. Шу билан бирга I-синф ўқувчилари учун февраль ойининг учинчи ҳафтасида бир ҳафталик таътил белгиланади.

20. Ўқув йили якунида V-VIII, X синф ўқувчиларининг меҳнат кўникмаларини шакллантириш ва касба йўналтириш мақсадида амалий меҳнат машғулотлари:

- V-VI синфларда 6 кун 3 соатдан;
- VII синфда 10 кун 3 соатдан;
- VIII синфда 16 кун 4 соатдан;
- X синфда 20 кун 6 соатдан бевосита мактабда, идора ва корхоналарда ўтказилади.

**Меҳмонхонамизда — Ўзбекистон халқ ҳофиси
Ҳасан Ражабий.**

Ҳасан Ражабий — эл суйган ҳофиз. Ўзбек мумтоз муסיқашунослигининг асосчиларидан бири, Юнус Ражабийнинг фарзанди. Ўзбекистон Бадиий академияси санъатшунослик институтининг фахрий доктори, “Дўстлик” ордени нишондори, меҳнат фахрийси.

— Юнус Ражабий, яъни Сизнинг падари бузрукворингиз ўзбек мумтоз кўшиқчилиги ривожига катта ҳисса қўшган сиймо. Сиз у кишининг фарзанди сифатида нималарни олишга улгуролдингизу, нималарга улгуролмадингиз?

— Хонадонимиздаги 12 фарзанддан бири мен эдим. Энди эса ўзим ҳам 6 фарзанднинг отасиман. Муслмонча тақвим ҳисоби билан от йилида туғилган эканман. 5 та мучалим тўлиб, бу йил эгизак синглим Зухра билан 60 ёшимизни нишонлаш арафасида турибмиз. Отамнинг ёшига, ҳозир ҳаёт юрган онам (97 ёш)нинг ёшига етиш насиб этишини Оллоҳдан сўрайман. Зеро, узок умр кўриш ҳам бахтнинг бир белгисидир.

Эл суйган ҳофиз бўлиш бахти насиб қилди. Бу, аввало, ота-онамнинг менга қилган унутилмас яхшилигидир. Чунки мен онамдан меҳрибонликни, одамийликни, камтаринликни, шукр қилишни ўрганган бўлсам, отамдан меҳнатсеварликни, одобу ахлоқни, рўзгор тебратишни, ҳаётни, инсонларни севишни, мен учун энг асосийси бўлган муסיқа илмини қадрлаш, уни тинглаш маданияти, ижро этиш услубларию, қачон ва қаерда нимани айтиш, устозларни ҳурматлаш, қадрига етишни ўқиб олдим. Аслида ота-онамдан менга ўтган ва улардан “юқтирган” ҳислатлар жуда кўп. Санасам, адо бўлмайди.

Отамдан олишга улгуролмаганим — уларнинг ўз ота-оналари ҳақидаги хотираларини тўлиқ сўраб, билиб ололмадим. Улар ҳам муסיқа илми билан шуғулланганми? Авлод-аждодалари ҳақидаги маълумотларни батафсил сўраб билмаганим, юрагимда армон бўлиб қолди. Ул зот қандай қилиб куй ва ашулаларни басталагани, ўзбек халқ муסיқасини, мақомларини қай тарихга тўплаб, китоб чоп этирганлари ҳақида ҳам унчалик қизиқиб, сўраб олмаган эканман. Отам билан 30 йил бирга яшаб, шуларни сўраб-билиб, кўнгил мулкима айлантиролмаганим мени қўяйди. Олдиндан оққан сувнинг қадри йўқ, деб шунга айтсалар керак. Ҳозир “Ражабийнома” деб номланган мемуар асар устида иш бошладим. Ана шу маълумотларга худди сув ва ҳаво каби зарурат сезаялман. Начора, бор манбаларга мурожаат қилаяман.

— Юнус Ражабий номини, кўпчилик, яъни у кишига замондош бўлмаган авлод эшитгану, аммо ул сиймонинг қандай инсон бўлгани, қандай ташвишлар билан яшагани ҳақида билмайди. Отаси ҳақида гапириш ҳар қандай фарзандга мароқ бағишласа керак?

— Албатта, ҳар бир киши ўз ота-онаси ҳақида фахр билан гапиргиси келади. Айниқса, халқнинг юрагига муҳрланган Юнус Ражабий сингари сиймолар ҳақида гапириш у кишининг мен каби барча ўғил-қизларига афзал ва мароқлидир. Киши аслида нафақат ўз ота-онасини, балки 7 пуштини билиши керак. Юнус Ражабий ўзбек мумтоз санъатининг ёрқин, ўлмас даргаларидан бири. У киши ўз замондошлари дилига катта инсоний қалби ва шу қалбга жо бўлган истеъдоди билан кириб борди.

Юнус Ражабий битмас-туганмас маданий мулк, ҳазина қолдириб кетдилар. Бу минглаб асрлар давомида халқимиз қал-

бида доимо бирга яшаб, аждодларимиздан бизгача жонли ҳолда, яъни куйланиб, ижро этилиб, ривожланиб етиб келган бебаҳо муסיқий мулк эди. Лекин у тарқоқ ҳолда сочилиб, унутилаёйиш даражасига ҳам келиб қолганди. Шуларни йиғиб, саралаб, куйлатиб, нота ёзувларига кўчириб, сайқал бериб, ажойиб ижроларини ҳам яратган Юнус Ражабий бўлди. Албатта, бунда у киши устозлари, шогирдлари ёрдамига таяндилар. Бой муסיқа меросига отам қайтадан жон бағишлагандек бўлди. Ўз халқига сайқаллаб, мангу куйланадиган қилиб, топшириб кетди. Камтарона яшаб ўтган инсон ўзи бойимаса ҳам, халқини маънавий жиҳатдан озгина бўлса-да, юксалтиришга ҳисса қўшди. Унинг шу куйлар асосида басталаган тароналарию бетакрор ижролари нафақат ўзбекларнинг, балки дунё халқларининг ҳам нодир асарларига айланди. Юнус Ражабийнинг кўп йиллик заҳматлари 5 жилдлик “Ўзбек халқ музи-

Меҳмонхона

айта оламиз.

Ўзбек мақомлари ҳам халқимиз муסיқасининг негизи, пойдевори. Уларда муסיқа жанрларининг барчаси жам бўлгандек, такомиллашгандек туюлади. Бунда куй, виртуоз соз ва овоз соҳибларининг ҳам гўзал, бетакрор ижролари катта роль ўйнайди. Юнус Ражабий Навоийнинг 525 йиллигига бағишлаб чиқарган 22 та катта диск грампластинкаси билан бутун дунёга танилди. Бир неча давлатларда, ҳатто маълум бир соатларда ўзбек мақомларининг янграб туриши, тингловчининг бундан мамнунлик ва масрурлик туйишларига гувоҳ бўлганман. Германияликлар ўзбек мақоми, унинг жонқури Юнус Ражабий ижоди ҳақида докторлик диссертацияси ҳам ёзишган. Турғун Алиматов, Муножот Йўлчиева сингари мумтоз кўшиқчилар Голландия, Франция, АҚШ ва

эфирга чиқиб кетишини тушунолмайман. Қандай дид-фаросат билан бундай бемаъни дастурлар тузилади? Ҳақиқий булбулларнинг сайрашига тўсиқ бўлаётган олақатот ҳаққаларга қарши кураш олиб борадиган вақт етди.

Хоразмча, тошкентча, андижонча, бухороча, самарқандча, бойсунча тароналар, “Тановор”у “Дилхирож”лар, “Омон ёр”у, “Лазги”ларнинг ўлмаслиги, шу кунга қадар етиб келишининг сирини нимада, деб ўйлайсиз? Негаки уларда халқнинг ўтмишидан, маънавий қиёфасидан далолат берувчи руҳ, жозиба бор, билсангиз.

— Сиз билан Юнус Ражабийнинг уй-музейида суҳбатлашяпмиз. Музейнинг ташаббускори ким бўлган ва бу ерга кўпроқ кимлар келишади, улар нималарга қизиқшади?

— Юнус Ражабий уй-музейи осонликча ташкил бўлгани йўқ. Муסיқа санъатимизнинг ягона академиги яшаб ижод қилган мана шу уй бугунги кунда унинг кўшиқларини эшитган ёки номидан хабардор кейинги авлод вакиллари ажайиб зиёратгоҳига айланди. У 1997 йил 18 декабрда тантанали суратда очилган. Тахминан 500 га яқин экспонат бор. Бу зотга давлатимиз, хусусан, Президентимиз томонидан кўрсатилган ҳурмат ва эътибор халқнинг ўлмас маънавий мулкни унинг ўзига гулдастадай қилиб, тортиқ этган сиймога, қолаверса у билан замондош

вақтида улгурардим. Серфарзанд оилада келди-кетди кўп эди. Биз 12 фарзанднинг ўзимизга яраша ўртоқларимиз кўп эди. Улар бизникида бемалол ётиб қолишар, бирга дарс қилишга эса шароит етарли эди.

Мақтаб... Уқувчилик кезларим 50—60-йилларга тўғри келди. 100, 80-мактабларда менга ўқиш-ёзишни ўргатган устозларимни яхши эслаймиз. Нина Васильевна, Лидия Алексеевна, Клавдия Ильиничналар ҳамон юрагим тўрида яшайди. Улар билан боғлиқ хотиралар худди кинодаги кадрлар сингари тез-тез кўз ўнгимда жонланиб туради. Устозларни унутиб, уларни хотирадан чиқариб бўларканми? Уларнинг тўй-маъракаларига бориб, ўз санъатим билан хизмат қилиб, раҳматини эшитяпман.

Кундузи Тошкентдаги Ҳамза номидаги муסיқа билим юртида, кечкурун ҳозирги ЎзМУ филология факультетида ўқишга имкон топдим. Йилларнинг ўтишини қаранг, худди кечагидек.

— Юртимизда санъатни ривожлантиришга бевосита мутасадди ташкилотлар — Маданият ишлари вазирлиги, Бадиий академия, расомлар, бастакорлар, ёзувчилар, театр арбоблари уюмалари борки, улар фаолияти бир тизимга солинса, мақсад ўша-ўша — маънавий, руҳий, жисмонан баркамол шахсни кўришдир. Айтинг-чи, Сиз етук ҳофиз сифатида Ўзбекистонда амалга оширилаётган иқтисодий, маънавий, сиёсий ислохотларга қандай муносабат билдирасиз?

— Юртимиз кўрқига-кўрк қўшиб, барпо этилаётган иншоотларни кўриб қувонаман. Савоб ишлар кўп. Ўзбекистондаги энг катта давлат аҳамиятига молик кадрлар тайёрлаш сийсати киши дилига нафақат таскину тасалли, балки юрт истиқболига ҳам ишонч уйғотади. Бизнинг давримиздаги эски, файзсиз мактаб бинолари ўрнида муҳташам таълим масканлари қад ростлаяпти. Мени кўпинча ҳофиз сифатида шундай масканларга таклиф қилишади, бажонидил бориб, ёшлар даврасида улар билан худди ёшлик йилларимга қайтгандек суҳбат қураман.

Халқимиз тилидан тушмайди-ган битта яхши тилак бор: “Топганингиз тўйга ва яхшиликка буюрсин”. Бу рад этиб бўлмас бир ҳикматдир. Чунки дунёнинг ҳеч қайси мамлакатига, ҳеч қайси миллатига ўзбеклар каби йиғиб, халққа ош бермайдилар. Ўзбек шундай яралган. Бу унинг аждодларидан мерос. Илоҳо, шу миллатнинг ўлмас аъёналари йўқолмасин, чунки уни ана шу боқий урф-одатлари дунёга танитмоқда. Илоҳо, унинг бугунги кўрқию тароватига, ривожига кўз тегмасин. Илоҳо, унинг ўзи севган фарзандлари омон бўлсин.

— Сизнинг йўлингиздан кетаётганлар хусусида фикрингиз борми?

— Учинчи ўғлим Азиз Ражабий изимдан кетаяпти. У мақом йўлида ижро этиладиган ашулалардан талайгинасини маромига етказиб қуйламоқда.

— Муштарийларимизнинг аксарияти Сизнинг хонишларингизни ойнаи ҳаҳон ва радио тўлқинларидан эшитишган. Фараз қилинг, Сиз улар билан катта аудиторияда учрашиб қолдингиз. Шунда қандай тилаклар изҳор этардингиз?

— Аслида ҳам мухлисларим билан катта аудиторияларда учрашиб кўп марта насиб этган. Мени ҳофиз даражасига кўтарган минглаб мухлисларимдир. Улар “Мириқиб тинглайман, сизни”, “Ҳамма ишимни йиғиштириб қўяман”, “Танбур қўлингизда йиғлаб тилга кирди-я” сингари мақтовлари билан менинг кучимга куч, илҳомимга илҳом қўлишади.

Ниятим, халқимиз бой-бадавлат яшасин, ҳалол топгани тўлқинларидан ҳам етиб ортсин. Энг мақбул урф-одатлар сақланиб, номақбуллари ортда қолаверсин.

Хулқар ТҶИМАНОВА
суҳбатлашди.

**Хасан РАЖАБИЙ:
САНЪАТ — МИЛЛАТ
ҚАЛБИНИНГ ОЙНАСИ**

каси”, 6 жилдлик “Шашмақом”, “Муסיқа меросимизга бир назар” деб номланган китобларда ўзининг буй-бастини, мақсад-муддаосини кўрсатиб турибди. Севимли шоиримиз Собир Абдулла ўз замондошнинг ижодига шеърый мисраларда шундай баҳо берган эди:

Киши хизмат қилар элга,
яшар у,
Ҳамиша ёдланиб,
унвону номи,
Улуғ иш қилдингиз,
бойликни тўплаб,
Тирилди сиз билан
ўзбек мақоми...

— Мумтоз кўшиқчиларимиздан бири Голландияга бориб, мақом йўналишидаги таронани куйлаганида, улар ҳам санъатнинг бу турини ўрганишга қизиқиб қолишган, ҳатто буни ўрганишга киришишган ҳам экан. Хорижий мамлакатларга борганингизда Сизда ҳам шундай ҳолатлар бўлганми? Умуман, мумтоз санъат намуналарининг ўлмас меросга айланишига сабаб бўладиган нарса нима?

— Санъат — бу миллат қалбининг акси, дейишади. Хорижий мамлакатларда ўзбек муסיқасига қизиқиш, бундан завқланиш, таажжубланиш, ўйлайманки, жуда қадимдан бошланган. Бизнинг миллат ҳам гўёки араб, турк, ҳинд, эрон, рус ва бошқа халқларнинг муסיқий асарларига ниҳоятда қизиққанлари сингари. Назаримда, бунга сабаб, барча халқлар ўз муסיқа санъати орқали дарду ҳасратини яққол ифода эта олганликларидадир. Ўзбек миллий куйлари жозибадор, таъсирчан, уйғун. Халқона оҳангдаги тароналар, ҳатто сўз билан ҳам ифода этиб бўлмайдиган даражада руҳий озуқа ва шифо. Нозик ҳис-туйғулар уйғота олади, олам-олам қувонч, гўзаллик ва нафосат улашади. Куй орқали биз унинг қайси миллатга тегишли эканлигини

бошқа мамлакатларда ўзбек санъатини намойиш қилганларида гулдурос қарсақлар анча вақт тинмаган. Юнус Ражабий номидаги ўзбек мақомчилари ансамбли Ҳиндистон, Арабистон, Индонезия, Япония сингари мамлакатларда концерт қўйишганида шинавандаларнинг тик туриб олқишлаганларига ўзим гувоҳ бўлганман. Ҳиндистонда танбур билан “Талқини баёт” таронасини ижро этганимда, бу халқ шунчалар олқишлади ва алқадикки, ҳамон ўша манзара кўз ўнгимда.

— Аср шиддаткор, замон текзор. Бугунги истеъдодли ёшларда эстрада санъати га мойиллик кучлироқ. Уларнинг келажак авлодга тақдим этиши ёки қолдириши мумкин бўлган санъати хусусида нима дея оласиз?

— Қанча замон ўтмасин, олтин зангламайди. Мен халқимиз руҳига мос муסיқий, адабий, тасвирий санъат асарларини ҳам олтинга қийёлагим келади. Инсон қалбини тўлқинлантирмайдиган асарлар ўз-ўзидан йўқолиб кетаверади. Шубҳасиз, эстрада санъати хонандалари орасида халқнинг ўзидан олиб, ўзига қайтараётганлари ҳам кўп: Насиба Абдуллаева, Юлдуз Усмонова, Фаррух Зокиров. Айни пайтда сиз айтганингиздек, битта кўшиқ яратиб, яратганда ҳам энгил-елпи матн асосида шон-шухратга даъвогарлик қилаётган хонандалар ҳам бисёр. Улар ёшларнинг дидини ўтмаслаштиради, холос. Шунинг ачинаманки, мумтоз санъатга нисбатан эстрада кўшиқлари радио ва телевидениеда тўхтовсиз берилади. Агар мақомга ҳам кўпроқ эътибор берилганда эди, ёшлар бу санъатни кўриб, эшитиб, баҳра олишга одатланишарди. Ҳозир эса ёшлар орасида мақом санъатини тушунмаслик, унинг ҳақиқий маъносини англаб етмаслик ҳолатларига барчамиз гувоҳмиз. Бемаъни ижроларга келганда, уларнинг қандай қилиб

бўлган санъаткорлар Фахриддин Содиков, Турғун Алиматов, Мулла Тўйчи Тошмухамедов, Мукаррама Турғунбоева, Берта Давидоваларга ҳам кўрсатилган иззат-икром деб биламан.

Уй-музей 6 бўлмадан иборат. Унда Юнус Ражабий фойдаланган уй-рўзгор буюмларидан тортиб, у яратган дурдона асарлар, чалган муסיқа асбоблари, ўқиган китоблари, кийган кийимлари, ижод столи, ҳатто ўрин-кўрпалари ҳам сақланмоқда. Музейни ҳақиқий қадамжога айлантириш мақсадидаги таъмирлаш ишлари уч йил давом этди. Давлат газнасидан ажратилган маблағ туфайли ана шундай кошона вужудга келди. Ҳозирга қадар уй-музейни 11 мингдан зиёд киши кўриб кетди. Улар орасида нафақат юрдошларимиз, балки МДХ мамлакатлари, чет элдан келган меҳмонлар, санъат шинавандаларининг ҳам борлиги кишини қувонтиради. Ражабий номининг у яшаган маҳаллага берилиши, кўчалар, билим юртлари, метро бекатларининг у киши номи билан аталиши қалбимга кечкиз бир эътироф, қониқш ҳиссини соладики, шунда ҳаёлимдан ўтади: “Ўз умрини халққа хизмат қилишга бағишлаган кишилар ҳеч қачон унутилмайди”.

— Инсон ёши улғайган сари ақли теранлашаверади, хотиралар эса узоқлашаверади. Уқувчилик давларингизда Сизга нималар таскин берарди, нималардан безовта бўлардингиз? Илк бор Сизга ҳарф ўргатган, кейинчалик ҳаётнинг эзгу сўқмоқларига бошлаган устозларингизни бир дам тин олиб эслайсизми?

— Бу гапнинг исботини ҳам отам ҳаёти мисолида кўрганман. У кишининг 80 йиллик умрини поғоналарга бўлиб кўрсак, ҳаёт ва ижодлари йил сайин юксалгани, теранлашганига гувоҳ бўлиш мумкин.

Уқувчилик давларимда хонадонимиздаги хотиржамлик менга таскин берарди. Дарсларга ўз

Seminar sabog'i

Дарҳақиқат, бугун компьютернинг чексиз имкониятларини ҳар қадамда, ҳаётимизнинг ҳар бир жабҳасида ҳис қилиб тураемиз. Интернет орқали тарқатилаётган энг сунгги хабарлар, шоҳкучаларда тизилишиб турган бежирим реклама плакатлари, беморнинг қайси аъзосида қандай хасталик борлигини кўрсатиб бера оладиган тиббий муассасалардаги жиҳозлар, Марс сайёрасидан олинган фотосуратлару бутун бошли автомобиль ишлаб чиқарувчи заводни бошқариб турган мураккаб техник ускуналар... Хуллас, бу рўйхатни узоқ давом эттириш мумкин.

Бироқ компьютернинг яна бир қулай жиҳати борки, бу таълим соҳасига жуда катта эътибор қаратилаётган бизнинг республикамиз учун муҳим аҳамият касб этади. Гап шундаки, таълим жараёнининг сифатини оширишга кучли таъсир қила оладиган дидактик воситалар — мультимедиа қурилмалари, электрон почта, электрон адабиётлар ва электрон кутубхоналар, масофадан ўқитиш дастурлари, анимацион, яъни тасвир ва товушни ўзида мужассамлаштирган кўргазмалар қўралларнинг барчаси айнан компьютер техникасига асосланади. Афсуски, бугун ривожланган ва ривожланаётган мамлакатларнинг таълим тизимида кенг миқёсда қўлланилаётган мазкур инновацион технологиялар бизнинг кўпга ўқитувчиларимизга ҳатто нотанишдир.

Аммо бир нарсани мамнуният билан қайд этиш лозимки, бу борада, аста-секинлик билан бўлса ҳам, муайян ишлар амалга оширилмоқда. Кеча Жаҳон иқтисодий ва дипломатия университети қошидаги Шайхонтоҳур академик лицейида бўлиб ўтган семинарда ушбу жараён алоҳида қайд этилиб, бу борада олдинда турган тўсиқлар,

уларни бартараф этиш йўллари муҳокама қилинди. Семинар академик лицейлар ва касб-ҳунар коллежларида электрон дарсликлар ва электрон кутубхоналар яратиш мавзусига бағишланиб, унда Тошкент шаҳри ҳамда баъзи вилоятлардан ташриф буюрган директор ва директор ўринбосарлари қатнашдилар.

Муҳим илмий ва амалий аҳамиятга эга бўлган мазкур анжуманда катта маблағлар эвазига олиб келинган ва лицей-коллежларга ўрнатилган ахборот технологияларидан самарали фойдаланилаётгани,

дай гаройиб “китоб”ларнинг аҳамияти ҳақида гапириб ўтириш ортиқча бўлса керак. Қолаверса, электрон адабиётларни компьютер тармоқлари орқали бир вақтнинг ўзида минглаб одамлар ўқиши мумкин. Тўғри, уларни яратиш қоғоз қоралашдан кўра кўпроқ меҳнатни талаб этади. Аммо бу қийинчиликлар китобларни нашрдан чиқариш ва тарқатиш машаққатларидан енгилоқ.

Айнан шунинг учун ҳам мамлакат ҳукумати бу соҳага алоҳида эътибор қаратмоқда. Кейинги бир йил ичида бу бо-

таларни компьютер орқали намойиш этар экан, уларни ишлаб чиқиш ва бошқа ўрта махсус, касб-ҳунар таълими муассасаларига тарқатишда юзага келаётган ташкилий, иқтисодий ва тизим вакиллари ўта бепарволиги билан боғлиқ муаммоларни ҳам қайд этиб ўтди.

Миллий университетнинг яна бир вакили — профессор Абдумажид Пулатов эса ўқитишда мультимедиа воситаларидан фойдаланиш

махсус муассаса ҳисобланмиш ўрта махсус, касб-ҳунар таълими ривожлантириш Институтининг илмий ходими Д. Сайфуддинов эса “Экология” электрон дарслиги мисолида бу турдаги адабиётларга қўйиладиган услубий, техник ва таълимий талабларни таҳлил қилиб берди.

— Ушбу жараён олдимизга қўйилган асосий вазифа — кенг фикрли, билимдон ёшларни вояга етказиш йўлида ўта муҳим аҳамиятга эга ва унга бошқалар ҳам қўшилмас экан, бирор натижага эришиш мушкул, — деди ўМКХТ Маркази раҳбари Жуманазар Хусанов семинарни якунлар экан. — Республикадаги барча академик лицейлар ва коллежлар биргаликда ҳаракат қилсагина, мазкур соҳанинг барқарор ривожланишини таъминлаш мумкин. Бу соҳада, лицей-колеж раҳбарлари лоқайдлик ва сусткашликка йўл қўймасликлари лозим.

Семинардан қайтар эканман, мамлакатимизда компьютерда ишлашни билмайдиган минглаб юртдошларимиз ҳали ҳам мавжудлигини, мустақил бўлганимизга ўн йилдан ошган бўлса ҳам “у”, “қ”, “г”, “ҳ” ҳарфларини компьютерда териш баъзи жойларда ҳамон муаммолигини, Ўзбекистонда қанчадан-қанча компьютерлар ёзув машинкаси вазифасини бажараётганини, рус ёки инглиз тилини билмайдиган чекка қишлоқлардаги ўзбек фарзанди она тилимиздаги дастурларнинг йўқлиги сабабли компьютерда ишлаш олмаслигини очиқ тан олишга мажбур бўлдим. Аммо бир нарса — орамизда мана шундай фидойи инсонларнинг борлиги, улар тинимсиз изланишда эканлиги кишига таскин беради.

Ботиржон ҒОҒУРОВ,
“Маърифат” мухбири

КОМПЬЮТЕР ЁЗУВ МАШИНКАСИГИНА ЭМАС

бу воситаларни таълим жараёнида фаол қўллаш учун қилиниши лозим бўлган қандай ишлар бор, электрон адабиётлар ва кутубхоналар қандай яратилади ва ишлатилади каби саволларга жавоб изланди.

Бугун Ўзбекистонда кадрлар тайёрлаш миллий дастурининг иккинчи босқичи бошланди ва энди, асосий эътибор таълим мазмуни ва сифатига қаратилиши лозим. Замонавий ва мукамал таълим тизимига эришишда эса компьютер, сўзсиз, биринчи ўринда туради. Хўш, ахборот технологиялари, хусусан, улар имкониятининг ҳосиласи бўлмиш электрон адабиётлар бизда қай даражада ривожланмоқда?

Ўзида 1500-2000 бетлик матнни сигдира оладиган, бунинг устига, ўқувчини жалб қилувчи турли анимацион материалларни ҳам ўзида мужассамлаштирган, фойдаланиш учун қулай бўлган бун-

радаги ишларни ривожлантириш мақсадида Вазирлар Маҳкамасининг иккита махсус қарори қабул қилинган ҳам фикримиз исботидир. Юқорида айтиб ўтилганидек, мазкур йўналишда республикамизда оз бўлса-да, тажриба тупланди. Семинарда сўзга чиққан нотичаларнинг барчаси ана шу қийинчиликларни енгиб, илк миллий электрон адабиётларни яратган таълим фидойилари бўлиб, улар маърузаларида ўз меҳнатларининг натижасини йиғилганларга кўргазмаларни равишда намойиш қилиб бердилар.

Семинарда маъруза қилган ЎзМУ қошидаги С.Раҳимов академик лицейи директори Баҳодир Йўлдошевнинг айтишича, электрон китоблар яратишда ҳатто ўқувчилар ҳам фаол иштирок этганлар. У академик лицейида махсус ташкил этилган ижодий гуруҳ томонидан тайёрланган турли фанларга доир адабиётлар, кўргазмалар ва дидактик воси-

ҳақида сўз юритиб, жумладан, шундай деди:

— Биз мазкур тизимни Туркия ва АҚШ таълим муассасаларига бориб, бевосита ўргандик. Университетимизда “Компьютер лингвистикаси” деб номланган махсус лаборатория ташкил этдик. Сиз кўриб турган ушбу дастурларни яратиш жараёнида ҳатто ҳозир АҚШда таҳсил олаётган “Умид” жамғармаси грантининг соҳиблари билан ҳам алоқа боғладик.

Маълум бўлишича, ЎзМУ вакиллари томонидан ёзилган дастурлар орасида академик лицей ва касб-ҳунар коллежларида иш юритиш, ўқувчи талабаларнинг рейтингини компьютерлаштирилган равишда ҳисобга олиб бориш, матнларни рус ва инглиз тилларига автоматик тарзда таржима қилишга доир дастурлар ҳам мавжуд.

Электрон адабиётлар ва кутубхоналарни яратиш соҳасида иш олиб бораётган ягона

ТАЪЛИМ ТИЗИМИНИ МОДДИЙ ТАЪМИНЛАШ — УСТУВОР ВАЗИФА

Маълумки, давлат бюджети маблағлари асосан биз, яъни фуқаролар тўлайдиган турли солиқлар ва йиғимлардан шаклланади ва яна ўзимизнинг, яъни жамиятнинг умумижтимоий эҳтиёжларининг қондирилишига сарфланади. Жумладан, таълим ва соғлиқни сақлаш муассасалари, тинчликни сақлаш, мудофаа харажатлари айнан бюджет ҳисобидан қопланади, давлатимиз ижтимоий ва иқтисодий ривожланиш учун зарур бўлган қурилишлар амалга оширилади.

Бугунги кунда давлат бюджети харажатларининг 25-28 фоизи таълимга йўналтирилган. Маълумки, собиқ иттифоқ даврида мамлакатимизда таълим маориф тизими ва унинг моддий-техник базаси жуда ачинарли аҳволга келиб қолган эди. Шу билан бирга, мустақиллигимизнинг дастлабки йилларида ўтиш даврининг иқтисодий қийинчиликлари туфайли бюджет тушумла-

рининг камайиб кетиши ҳам бу тизимнинг моддий-техник базасини яхшилашга керакли маблағларни тўлиқ ажратилишига имкон бермади.

Кейинги йилларда мамлакатимиз иқтисодий ҳаётининг рўй берган ижобий ўзгаришлар ўз навбатида таълим соҳасига ажратилаётган маблағларнинг миқдорини бирмунча ошириш имконини берди.

Жумладан, 2001 йил давомида республикамиздаги умумтаълим мактабларини капитал таъмирлашга бюджетдан кўшимча 2,8 млрд. сўм маблағ ажратилган бўлиб, ушбу маблағлар мавжуд 9,6 мингдан ортик муассасаларга эмас, балки капитал таъмирлашга муҳтож бўлган 235 та мактабга йўналтирилди. Ушбу тадбир 2002 йилда ҳам давом эттирилади ва бунга кўшимча 4,3 млрд. сўм маблағ ажратиш кўзда тутилган бўлиб, унга 278 та

мактабни тўлиқ капитал таъмирлаш режалаштирилган.

Бундан ташқари, 2002 йилда бутун узлуксиз таълим тизимининг моддий-техника базасини кучайтириш мақсадида болалар боғчаларини капитал таъмирлашга кўшимча 1,2 млрд. сўм маблағ ажратилиши бу йил учун тасдиқланган бюджет кўрсаткичларида белгиланган.

2001 йилда мактабларни ўқув мебеллари (парталар) билан таъминлашга бюджетдан 3,6 млрд. сўм ажратилган бўлса (ушбу маблағлар ҳисобига умумтаълим мактаблари 61 минг дона ўқув парталари билан таъминланди), 2002 йилда ушбу мақсадга 4,7 млрд. сўм маблағ ажратилиши кўзда тутилмоқда. Болалар боғчаларини керакли мебель жиҳозлари билан таъминлашга эса кўшимча 0,6 млрд. сўм маблағ ажратилади.

Келажак давр таълим тизимини компьютерларсиз тасаввур қилиш жуда қийин. Шу туфайли ҳукуратимиз умумтаълим мактабларини компьютер синфлари билан жиҳозлашга алоҳида эътибор қаратмоқда. Жумладан, 2001 йили 1,3 млрд. сўм миқдорда ажратилган маблағлар ҳисобига 1456 дона янги модификациядаги компьютерлар харид қилинган бўлса, 2002 йили ажратилган маблағлар миқдори деярли 2 баробарга кўпайди ва 2,5 млрд. сўм миқдорда белгиланди. Ушбу маблағлар ҳисобига мактабларни 2600 дона янги компьютерлар билан жиҳозлаш режалаштирилмоқда.

Хулоса қилиб айтганда, ушбу маблағларнинг ажратилиши таълим жараёни сифатига билвосита ижобий таъсир ўтказиши муқаррабдир.

Зулхумор МАҲМУДХҲАЕВА,
Тошкент Молия институти 2-босқич магистранти

Ta'kid

Таътил бошланди дегунча ота-оналарнинг ширин ташвиши яна биттага кўпаяди: таътилда болаларим қаерда дам олади? Улар нима қилади? Шу ёзда бирор хунар ўрганиб олса яхши бўларди?

син” деб ўйлайдиган ота-оналар жигарбандларини оромгоҳларга жўнатишади.

Оромгоҳ ўз номи билан оромгоҳда. У ерда болалар тарбиячи ва мураббийлар назоратида бўлади, ҳар куни

ЁЗ ЎТМОҚДАМИ СОЗ?

Баъзи ота-оналар қўлидан иш келиб қолган, ўсмир ёшига етган ўғил-қизларини бирор хунармандга шогирдликка беришади, баъзилари уй юмушларига қарашиб юрар” деб, ўзларининг кўз олдиларида олиб қолишади, ишдан, турли ташвишлардан ортолмайдиган, “тўққиз ой уйда сиқилиб кетди, бир яйраб кел-

эрталаб бадантарбия билан шуғулланади, тўрт маҳал овқатланишади, турли кўнгилоҳар тадбирларда иштирок этади, дўстлар орттиради. Хуллас, ота-она: “уйда бир ўзи эди, овқат едимикан, газни ёқаман деб бирор фалокатга йўлиқмадимикан, у ер-бу ерини кесиб олмадимикан, телевизиорни ўчирдимикан”, деган хавотирлардан холи бўлади.

Тошкент шаҳар газ таъминоти шўъба корхонасига қарашли “Зангори олов” оромгоҳи йўлаклари, гуруҳлар дам оладиган хоналари ҳаммаси рисоладагидек. Ўнг томондаги чиройли панжаралар билан ўралган чўмилиш ҳавзаси сувга тўла. Тип-тиник сувни кўрган ҳар қандай одамнинг сувга шўнғииси келади. Уриндиқлар бўялган, оромгоҳ йўлагидagi турли суратлар ишланган плакатлар ҳам кишига завқ бағишлайди.

Ушбу маскан раҳбари Йўлдош Холметов болаларнинг дам олишига барча шароитлар муҳайё қилинганлигини гапириб берди:

—Оромгоҳимизда бир мавсумда Тошкент газ

дек, фитобар ҳам ишлайди. Утган йили болаларнинг овқатланиши учун 15 миллион сарфлаш режалаштирилган эди, лекин 18 миллион сўмлик озиқ-овқат маҳсулотлари харид қилинди. Жорий йилда озиқ-овқат маҳсулотларига 23 миллион сўм сарфлашни режалаштирдик. “Меҳрли савдо” корхонасининг 8-дўкони, “Хўжа-кент” ширкатлар уюшмаси билан шартномалар тузганмиз. Болаларга меъёрдаги ҳамма маҳсулотларни етказиб берамиз. Утган йили 40 минг сўмлик бадиий адабиётлар харид қилинганди. Бу йил эса фақат янги имлодаги китобларнинг ўзига 30 минг сўм сарфладик Оромгоҳ кутубхонасида икки мингга яқин

лама шай эканлигини ўз кўзингиз билан кўрасиз”, дея хайрлашди. Оромгоҳдан кўнглим кўтарилиб чиқди. Бир ҳудудда жойлашган икки оромгоҳдаги икки хил манзарани кўриб хайрон бўлдим.

Р.С. Жорий йилда мамлакатимизнинг 747

та соғломлаш

тириш оромгоҳида 270 мингдан зиёд ўғил-қиз дам олади. Айни шу мақсад учун 2 миллиард 584 миллион сўм маблағ сарфлаш кўзда тутилмоқда. Ҳукумат қарорига мувофиқ, Қорақалпоғистон Республикаси ва Хоразм вилоятида яшовчи болалар ҳам юртимизнинг энг сўлим оромгоҳларида уч

“БИЗ УСЛУБИЙ ЁРДАМ БЕРАМИЗ”

2002 йилнинг ёзи бошланди. Таътил қандай ўтмоқда, оромгоҳлардаги шароитлар яхшими? Жойларда болаларнинг дам олиши қандай ташкиллаштирилган? Халқ таълими вазирлигининг маънавий-маърифий ишлар бошқармаси бошлиғи Ж.Фозиловдан шу каби саволларимизга қуйидагича жавоб олдик:

— Ўқувчиларнинг ёзги дам олишини ташкил қилиш мақсадида вазирликнинг апрель ойида чиқарган буйруғи асосида жойларда ишлар бошланган. Халқ таълими вазирлигининг асосий вазифаси оромгоҳларни тарбиячилар, тўғарак раҳбарлари, мусиқа мураббийлари, жисмоний тарбия раҳбарлари билан таъминлаш. Уларга услубий қўлланмалар, тавсиялар билан ёрдам беришдан иборат. Шу мақсадда Республика Касаба уюшмалари Федерацияси билан ҳамкорликда “Семурғ” оромгоҳида республика миқёсида семинар ўтказилиб, унда

оромгоҳ ташкилотчилари учун ишлаб чиқилган тавсиялар билан барча таништирилди. Дам олиш оромгоҳлари ташкилотчилари нима ишлар билан шуғулланишлари керак, болалар дам олиш билан бирга яна нималар билан машғул бўлишлари мумкин, деган саволларга ана шу семинарда жавоб берилди. Барча вилоятларнинг болалар ижодкорлик марказлари қошидаги тўғараклари таътил давомида оромгоҳларда фаолият юритадиган бўлди.

Вазирлик тасарруфида бешта педагогика олий ўқув юрти мавжуд. Талабалар педагогик амалиётни оромгоҳларда тарбиячи, етакчи вазифаларида ишлаб ўтказишади. Республика бўйича етти мингдан зиёд оромгоҳ бўладиган бўлса, унда 270 минг нафар ўқувчи дам олиши, 12 минг нафарга яқин мураббий меҳнат қилиши кўзда тутилган.

“УЛГУРОЛМАЙ ҚОЛДИК”

Июнь ойининг ярми ўтди. Оромгоҳлар болаларни бағрига олди. Жумладан, қирадиқлар, фусункор тоғлар билан ўралган Бўстонлик туманининг Қоранкўл қишлоғида “Метрокурвчи” ташкилотининг “Метрокурвчи”, Тошкент шаҳар газ таъминоти шўъба корхонасининг “Зангори олов” номли оромгоҳлари жойлашган. Бир саккиз, яна бири ўн бир гектар ер майдонини эгаллаган бу оромгоҳлардаги шароит билан танишдик.

“Метрокурвчи” оромгоҳи 11 июнь куни биринчи мавсумга болаларни қабул қилиб олибди. Ўша куни биз ҳам кириб борибмиз. Йўлак четида синган ёнғоқ шохларининг уюлиб ётиши оромгоҳ ҳовлисида кирган киши кўзига хунук кўринади. Оромгоҳ раҳбари Ҳоким Ашировдан болаларни кутиб олишга қандай ишларни амалга оширганликлари ҳақида сўрадик.

— Бир мавсумда метрокурвчи ва йўл қурувчиларнинг 210 нафар фарзандлари оромгоҳимизда дам олишади. 60 нафар ўқувчи эса Оролбўйи минтақасидан ташриф буюради. Шу кунгача кўпгина ишларни амалга оширдик.

— Ушбу маскани таъмирлаш, мавсумга тайёрлаш учун қанча маблағ сарфланди?

— 12 нафар доимий, 12 нафар мавсумий ишчи-хизматчилар бор. Тарбиячилар, етакчилар, тўғарак раҳбарлари, ошпазлар бунга кирмайди. Тўғриси, ободонлаштириш ишларига улгуролмай қолдик. Мана болалар келди. Энди ҳаммаси изга тушиб кетади.

— Болалар дам олишга келишадими ёки кинотеатр йўлагидagi футбол ва баскетбол майдонидagi ўт-ўланларни тозалашгами...?

— Маънавият ва маърифат хонаси, деган ёзув янги имлода нотўғри ёзилибди. Нахотки, бирор киши бунинг қандай ёзилишини билмасми?

— Тўғриси, қандай ёзилишини билмадик. Рассомимиз рус миллатига мансуб киши эди...

Майли, ёзув нотўғри бўлса ҳам ушбу хона яхши жиҳозлангандир деб, хона ичкарига кирдик. Беш-олтита стул, иккита стол бор хонада учта плакат осиглиқ турибди. “Голос” номли оромгоҳ билдирувлар тахтаси тескари қилиб қўйилган. Қутиларга солинган китоблар 231 донга. Оромгоҳ бош тарбиячисининг айтишича, бу ҳали кутубхона дегани эмас. Ушбу китобларни мана шу ерда ишлаган кишилар, дам олиб кетган ўқувчилар совға тариқасида қолдиришган.

Соғлиқни сақлаш вазирлиги 1997 йилнинг 7 майида 214-сонли буйруқ чиқарган. Унда оромгоҳларда 7 турдаги 55 хил дори-дармон бўлиши кераклиги таъкидланган. Ҳ.Аширов дори-дармон, спорт жиҳозларига 250 минг, канцелярия молларига эса 170 минг сўмлик маблағ сарфланди, деди. Ҳ.Ашировдан

— Ҳали сарфланган пулларнинг умумий йиғиндиси чиқмади. Маблагнинг ҳаммасини “Метрокурвчи” бошқармаси тақсимлайди. Шунинг учун бу йилги таъмирлашга қанча маблағ сарфланганлигини билмайман.

— Ҳовлида қурилиш бошланган экан. Арматуралар, цемент зинаояларнинг уюлиб ётиши болаларнинг дам олишлари га халақит бермайдими?

— Бу ерга соғломлаштириш комплекси қурмоқчимиз. Ҳамма нарса — чўмилиш ҳавзаси, саунаси, физиотерапия хоналари бинонинг ичида бўлади. Ҳозирча уларни сим тўсиқлар билан ўраб қўямиз. Болалар унинг яқинига йўламайдилар.

— Йўлаклар шох-шаббалар, ўт-ўланлардан тозаланмади. Қанча ходим меҳнат қилади?

— 12 нафар доимий, 12 нафар мавсумий ишчи-хизматчилар бор. Тарбиячилар, етакчилар, тўғарак раҳбарлари, ошпазлар бунга кирмайди.

— Болалар дам олишга келишадими ёки кинотеатр йўлагидagi футбол ва баскетбол майдонидagi ўт-ўланларни тозалашгами...?

— Маънавият ва маърифат хонаси, деган ёзув янги имлода нотўғри ёзилибди. Нахотки, бирор киши бунинг қандай ёзилишини билмасми?

— Тўғриси, қандай ёзилишини билмадик. Рассомимиз рус миллатига мансуб киши эди...

Майли, ёзув нотўғри бўлса ҳам ушбу хона яхши жиҳозлангандир деб, хона ичкарига кирдик. Беш-олтита стул, иккита стол бор хонада учта плакат осиглиқ турибди. “Голос” номли оромгоҳ билдирувлар тахтаси тескари қилиб қўйилган. Қутиларга солинган китоблар 231 донга. Оромгоҳ бош тарбиячисининг айтишича, бу ҳали кутубхона дегани эмас. Ушбу китобларни мана шу ерда ишлаган кишилар, дам олиб кетган ўқувчилар совға тариқасида қолдиришган.

Соғлиқни сақлаш вазирлиги 1997 йилнинг 7 майида 214-сонли буйруқ чиқарган. Унда оромгоҳларда 7 турдаги 55 хил дори-дармон бўлиши кераклиги таъкидланган. Ҳ.Аширов дори-дармон, спорт жиҳозларига 250 минг, канцелярия молларига эса 170 минг сўмлик маблағ сарфланди, деди. Ҳ.Ашировдан

дори-дармонлар қаерда сақланмоқда; уларни кўрсак бўладими, деган саволимизга:

— У нарсаларни бошлигимдан бошқа ҳеч кимга кўрсата олмайман. Ҳатто сизга ҳам, — деган жавобни олддик.

— Ҳеч бўлмаса ҳужжатларини кўриб, қандай дори-дармон олинганлиги билан танишайлик.

— Дори-дармон йўқ, пул кеч ўтказилган эди, шунинг учун ҳали ҳеч нарса олиб келолмадик, — дея яна бошқача жавоб айтди оромгоҳ раҳбари.

— Дам олувчиларнинг овқатланиши қандай бўлади?

— Тошкент шаҳрида жойлашган “Меҳрли савдо” корхонаси билан шартнома имзолаганмиз. Гўшт маҳсулотларидан тортиб, мева-чевагача ўша корхонанинг 16-4-дўконларидан оламиз. Бу борада камчиликлар йўқ.

Ўша куни оромгоҳга “Метрокурвчи” бошқармаси бош муҳандиси Темур Эшонхўжаев ҳам борган экан. У киши ҳам Ҳ.Аширов билан бирга нега оромгоҳ мавсумга шай эмаслигини, нега камчиликлар бўлсада болалар қабул қилинганлигини яхшилаб тушунтириб беришга ҳаракат қилди. Ҳаммасига маблагнинг йўқлиги сабаб. Кейин оромгоҳ раҳбари талаб қилувчи, мустақил иш юритувчи шахс эмас, балки “катталар” нима деса шуни амалга оширувчи экан. Катталар пул берса оромгоҳни таъмирлайди, бўлмаса йўқ.

Ҳ.Ашировдан мутассадди ташкилотларга жўнатилган хатларнинг нусхасини кўрсатишни сўраганимда, у киши “хатлар менда турмайди” деган жавобни берди. Ҳужжатлар, бухгалтерия ҳисоб-китоблари билан Қурилиш монтаж бошқармаси бошлиғи Руслан Зоиров исмли киши шуғулланар экан. Афсуски, у киши билан боғлана олмадик. Камчиликларга маблагнинг йўқлигини сабаб қилиб кўрсатётган оромгоҳ директори охири ўз айбини тан олди, “Таъмирлаш, мавсумга тайёрлаш ишларига улгуролмадик, вақт етмади”. Яна оромгоҳ ташқи кўринишининг ёмонлигига тинимсиз ёққан ёмғир ҳам сабабчи экан. “Ёмғир ёғавериб, ишимизнинг белига теғди. Шунинг учун чўмилиш ҳавзасини ҳам мавсумга тайёрлай олмадик, яна икки ҳафтадан кейин келинг, ҳаммаси жойида бўлади”, деди Ҳоким ака сўзининг якунида.

Шарифа
МАДРАҲИМОВА,
“Ma'rifat”нинг махсус
мухбири

“ДУШАНБА КУНИ ОЧИЛИШ МАРОСИМИГА КЕЛИНГ”

таъминоти корхонаси ходимларининг 200 нафар фарзанди дам олади. Санаторий типидagi оромгоҳ ҳисобланувчи ушбу масканда бутун таътил давомида Оролбўйи минтақасининг 140 нафар ўқувчиларини ҳам дам олдириш режалаштирилган. Бундан ташқари “Ўзбекқоғоз” бирлашмаси, Тошкент тўқимачилик комбинатида меҳнат қилаётган кишиларнинг ҳам бир мавсумда 20-25 нафардан болалари ҳордиқ чиқаришади. Оромгоҳ 1998 йилда “Тошкентгаз” шўъба корхонасига ўтган бўлса, ўша йили 55 миллион сўмлик маблағ сарфланиб, капитал таъмирланган. Бу йил эса 3,5 миллион сўмлик жорий таъмирдан чиқардик. Бундан ташқари 1,5 миллион сўмлик ошхона анжомлари, 300 минг сўмлик дори-дармон, 450 минг сўмлик спорт буюмлари, 320 минг сўмлик канцелярия моллари харид қилдик. Тишларни даволаш учун керак бўладиган дори-дармон ва гигиеник воситаларга эса 250 минг сўм харажат қилинди. Оромгоҳ санаторий типидagi бўлганлиги боис болалар 21 кун дам оладилар, 6 маҳал овқатланиб, соғлиқларини тиклаш учун физиотерапия муолажаларини қабул қилдилар. Шунинг-

адабиётлар мавжуд. Бундан ташқари Бўстонлик тумани халқ таълими бўлимига қарашли 15-мактаб кутубхонасидан ҳам китоблар келтирилади.

Тиббий ходимлар, етакчи ва тарбиячилар, жисмоний тарбия раҳбари иш олиб бормоқда. Улар услубий тавсиялар билан танишиб чиқишган. Сономчалардан шакллар ясаш ва спорт тўғараги ташкил қилганмиз. Бундан ташқари, ҳар куни ўтказишга мўлжалланган турли номдаги тадбирлар режаси ишлаб чиқилган.

6 ёшдан 13 ёшгача бўлган болалар дам оладиган, ҳордиқ чиқарадиган ушбу масканимизда дилбанд-ларимиз таътилни мароқли ўтказишади, деб умид қиламан.

Суҳбат давомида мен Йўлдош Холметовдан “Сизларда ҳам ёмғир ёғдими?”, деб сўрадим. “Ҳа, кун ора ёғди. Ҳар куни шамол, ёмғир. Бу йил серёғин келди”, деб қўшиб қўйди суҳбатдошим.

Мен борган пайтда болаларнинг келишига тайёргарлик кўрилатган экан. Оромгоҳ раҳбари “Душанба куни оромгоҳнинг биринчи мавсумининг очилиш тантанаси, яхшиси ўша куни келинг, оромгоҳимиз мавсумга ҳар томон-

мавсумда навбати билан ҳордиқ чиқаришади, ўз соғлиқларини мустаҳкамлайдилар.

Хулоса қилиб шунга айтиш мумкинки, барча имкониятлар ишга солинса, истак ва хоҳиш бўлса, ҳамма нарсага улгуриш мумкин.



Mahmud Hasanov — 1992 yil 3 mart kuni Denov tumanidagi Cho'ntosh qishlog'ida tug'ilgan. Hozir qishlog'idagi 37-maktabning 3-sinfida o'qiydi. 300 ga yaqin she'r yoddan biladi. She'rxonlik bo'yicha tuman tanlovida 1-o'rinni olgan.

Ko'p she'r yod olishi ko'nglida ijod havasini tug'dirdi. "Onajon" — uning hozirgacha yozgan she'rlari ichida eng yaxshisi va eng yaxshi ko'rgani.

ONAJON

Ko'zlarimdan uyqu qochdi, nogoh sahar pallasi,
Ko'kda oyni qutlar edi g'ujg'on yulduz yallasi.
Nazarimda oy onayu, yulduz farzand galasi,
Shu on bunga ulandiyo qo'shni kelin allasi,
Xayollarim senga tomon parvoz etdi, onajon,
Qalbim jo'shib noming bilan dil roz etdi, onajon.

Onajonim, oq sut berding mehr bilan ardoqlab,
Tunlarimga ziyo berding beshigimni quchoqlab,
Kamol berding, nusrat berding,
tilak berding dil bog'lab,
Lekin hanuz xizmatini qila olmadim oqlab.
Xayollarim senga tomon parvoz etdi, onajon,
Qalbim jo'shib noming bilan dil roz etdi, onajon.

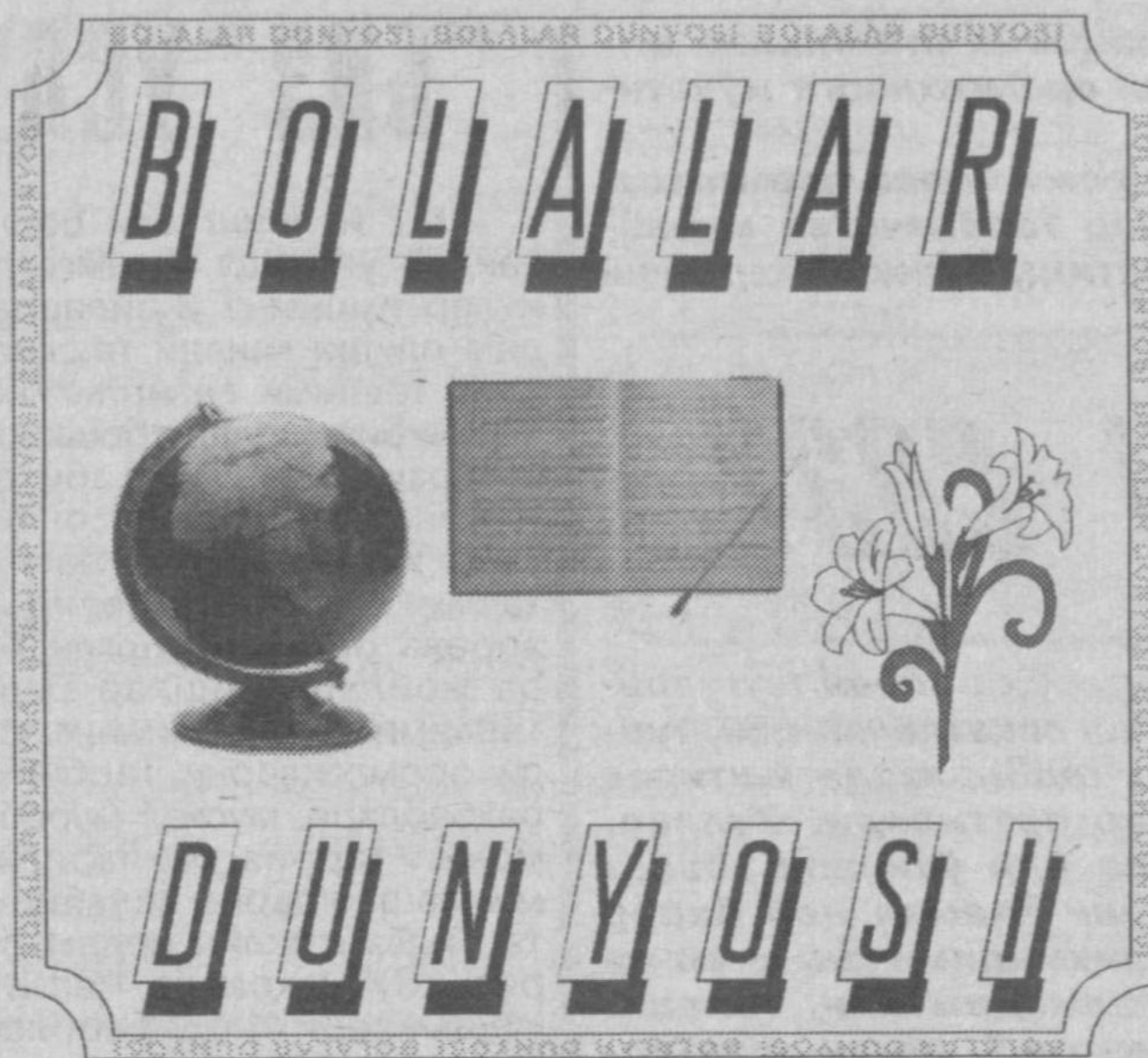
Hayot ekan, bo'lar ekan har boshda bir savdosi,
Pashshadan fil, fildan pashsha yasar ekan g'avg'osi,
Tiriklikning insonlarga bergan asl dunyosi,
Mehr ekan, mehr ekan, faqat mehr davosi.
Xayollarim senga tomon parvoz etdi, onajon,
Qalbim jo'shib noming bilan dil roz etdi, onajon.

G'ussa kelsa odamzodga cheksiz olam ekan tor,
Quvonch kelsa tor kulba ham ekan cheksiz beg'ubor.
Dunyo ishi buzmoq ekan, ko'rmoq ekan ham takror,
Faqat ona mehri ekan kelajakka poydevor.
Xayollarim senga tomon parvoz etdi, onajon,
Qalbim jo'shib noming bilan dil roz etdi, onajon.

Sendan yiroq ne savdolar kechirmadi oy boshim,
O'g'itlaring bo'ldi doim kurashlarda yo'ldoshim.
Xalq Vatan yodi bo'ldi mangu porloq quyoshim,
Chunki sening mehri edi eng yaqinim, sirdoshim.
Xayollarim senga tomon parvoz etdi, onajon,
Qalbim jo'shib noming bilan dil roz etdi, onajon.

O'ylab boqsam hayot gashtin ko'p qatori suribman,
Ba'zan yomon, ba'zan yaxshi ko'chalarda yuribman,
Kapalakdek mitti parvoz o'zni har yon uribman,
Faqatgina ushbu damda Mahmud bo'lib turibman.
Xayollarim senga tomon parvoz etdi, onajon,
Qalbim jo'shib noming bilan dil roz etdi, onajon.

**Mahmudjon HASANOV,
Denov tumanidagi 37-maktabning 3-sinf o'quvchisi**



BOLALIK

Bolalikning o'sha quvnoq sho'x damlari,
Endi do'stim, olislarda qolib ketdi.
Bizlarga chin do'st tutingan porloq yulduz
Bolalikni koinotga olib ketdi.

Oy ham bizga havas ila boqar edi,
Mayin sabo dillarga xush yoqar edi,
Sharqiroq suv ertak so'ylab oqar edi,
Bulbul menga sho'x kuylarni chalib ketdi.

Nafis gullar edi mudom bizga hamdam,
Omad, baxtlar ortimizdan tashlar qadam,
Kezar edik xayollarda samoni ham,
Endi ular faqat yodda qolib ketdi.

Mayli shabbodalar menga sirin aytmaz,
Baxtiyorlik o'sha damdan o'zga paytmaz,
Bolaligim endi hech ham ortga qaytmaz,
Dilim hijron og'ushiga to'lib ketdi.

**Gulrubbegim SAYFIDDIN qizi,
Respublika Nafis san'at litseyi
10-"B" sinf o'quvchisi**

OYGUL BO'LGIM KELADI

Otashnafis shoir Hamid Olimjon
baxt, shodlik kuychisi
hisoblanadi.

Buni biz uning "Baxtlar vodiysi", "O'rik gullaganda", "O'zbekiston" asarlari misolida aniq tasavvur etamiz. U lirik shoir, kuchli dramaturgga emas, balki dostonnavis qalamkash sifatida ham e'zozlidir. Shu ma'noda mening murg'ak qalbimni to'liqlantirgan, hayajonga solgan uning mashhur "Oygul bilan Baxtiyor" dostoni bo'ldi.

Hamid Olimjon dostonning materialini xalq og'zaki ijodidan ("Malikai jahon", "Said hezimkash", "Oygul bilan Baxtiyor", "Malikai Husniobod" va boshqalar) olgan hamda onasidan tinglagan:

Bolalik kunlarimda,
Uyqusiz tunlarimda,
Ko'p ertak eshitgandim,
So'ylab berardi buvim.
... Esimda o'sha damlar:
O'zi uchar gilamlar.
Tohir-Zuhro, Yoriltosh,

Oyni uyaltirgan qosh.
O't bog'lagan qanotlar,
Beqanot uchgan otlar...

Dostonning bunday sehrli
misralar bilan boshlanishiyiq
har qanday katta-kichik
kitobxonni o'ziga tortadi, rom qilib
oladi.

Dostonni ko'p bor qayta-qayta
o'qib chiqaman. Har gal
o'qiganimda o'zimda qandaydir
shijoat, kuch-jasorat paydo
bo'lgandek bo'laveradi.

O'zimni Oygul bilan
solishtiraman: Oygul boylikka
emas, xonu podsholarga yor
bo'lishga emas, oddiylikka,
soddalikka intiladi, xuddi o'zi
singari mehnatkashga talpinadi.
Cho'pon Baxtiyor bilan baxtini
topadi.

O'zgalarning ham xuddi o'zi
kabi baxtli bo'lishi, ozod yashashi
uchun qo'lga qurol oladi.
Mardlik, jasorat kamarini beliga
mahkam bog'lagan Oygul
nafaqat Susambilni, balki kindik
qoni to'kilgan Jambilni ham
zulmkorlardan ozod qiladi.

Bugungi kunda ko'pincha
kitobxonlik kamayib ketdi, yoshlar
badiiy asarni kam o'qiydigan
bo'lib qoldi, degan gaplar
quloqqa chalinadi. Menga qolsa,
kechayu kunduz badiiy kitob
o'qigan bo'lar edim. Birgina
Hamid Olimjonning xalq og'zaki
ijodi bilan yo'g'rilgan "Oygul bilan
Baxtiyor" asarining o'ziyoq har
qanday kitobxoniga katta ma'naviy
ozuqa beradi. Prezidentimiz
jonajon O'zbekistonimizning
yoshlari nafaqat o'qimishli, balki
har tomonlama yuksak insonlar
bo'lib kamol topishlari uchun
kerakli shart-sharoitlarni yaratib
berib turgan bir paytda
tengdoshlarim badiiy kitoblarni
yanada ko'proq o'qishsa,
maqsadga muvofiq bo'lar edi.

Men esa yaxshi o'qib, odobli qiz
bo'lib, xuddi Oygul singari xalq,
yurt g'amini yeydigan bir inson
bo'lmoqchiman.

**Nasiba YUSUPOVA,
Marhamat shahridagi akademik
litsey o'quvchisi**

BAHOR

Bodom daraxtlari gullagan chog'da,
Qushlar chug'ur-chug'ur sayragan onda,
Daraxtlar barg yozib yashnagan bog'dan,
Bahorning nafasi ufurib keldi.

Binafsha ochildi, yangradi yalla,
Dala, adirlarda ko'm-ko'k maysalar.
Mayin shabada esib, quyosh charaqlab,
Bahorning nafasi ufurib keldi.

**Nilufar EGAMBERDIYEVA,
Pop tumanidagi 26-maktab o'quvchisi**



SEHRLI GUL

Derazamdan boqsam dalaga,
Ko'zim tushar ajoyib gulga.
Bu gul meni hayron qiladi,
O'xshatarman uni yulduzga,
Dilda titroq, hayratda qolib,
Eshitarman go'yo so'zlarin.
Unga boqsam zavqlarga to'lib,
Porlab ketar qora ko'zlarim.

**Qunduz RAHMONOVA,
Navoiy shahridagi 5-maktab o'quvchisi**

TINCHLIK

Yulduzli osmonim
Shu'lang sochaver.
Humo qushim, sen
Parvoz etaver.
Yurtimdagi bog'lar
Gullarga to'lsin.
Elimning tinchligi
Barqaror bo'lsin.

**Gulhayo IBROHIMOVA,
Nurobod tumanidagi
3-maktabning 5-sinf o'quvchisi**

ATIRGULIM

Bog'ning go'zal erkasi,
Borliqning malikasi
Gullarning eng sarasi,
Yog'du bo'l, atirgulim.
Muattar hid taratib,
Kishi dilin yayratib.
Bulbullarni sho'x sayratib,
Cholg'u bo'l, atirgulim.

Xazon bo'lma, hech qachon,
Yashnab turgin har qachon.
To'kilish bir armon,
Orzu bo'l, atirgulim.

**Shahlo XUDOYBERDIYEVA,
Kitob tumanidagi Ahad Xo'jayev
nomidagi maktabning 7-sinf o'quvchisi**

ONA MEHRI

Har kun tongda ertalab,
Boshim silab erkalab.
Uyg'otar meni oyim,
So'zlari ko'p muloyim.

Bolajonim turgin deb,
Qo'l-yuzingni yuvgin deb,
Shirin taom tayyorlar,
Shoshilmasdan yegin deb.

Men turib yuvinguncha,
Mashq qilib kelguncha.
Dasturxon tuzar oyim,
Oppoq kiyim kiyguncha.

So'ng kuzatar maktabga,
"5" baholar olgin deb.
Qo'l ochar duolarga,
Bolam odam bo'lgin deb.

**Sherzod RO'ZIYEV,
Shofirkon tumanidagi
12-maktabning 2-sinf o'quvchisi**

YURTIM

Qomatingdan aylanay,
Jonajon yurtim.
Ostonasi tillodan,
Koshona yurtim.

Do'stlarga bag'ri ochiq,
Do'stona yurtim.
Osmoni serquyoshdir,
Nurxona yurtim.

Yoshlaringda mujassam,
Nomus birla or.
Avlodlaring sengadir,
Har dam madadkor.

Ey yurtim, yurtim,
O'zbekistonim.
Gullarga makon,
Hur Gulistonim.

**Orifjon XOLBEKOV,
Xovos tumanidagi
6-maktabning
6-sinf o'quvchisi**

БОЛАЛАРНИ СЕВАДИТАНЛАР ЖУРНАЛИ



"Sog'lom avlod uchun" журнали иловаси — "Maktabgacha ta'lim" журналининг бу йилги 4-сонини нашрдан чиқди.

Журнал саҳифалари ҳар галгидек соҳада рўй бераётган жараёнлар, ўзига хос янгиликлар акс этган материалларни қамраб олган. "Mutaxassis maslahati", "Tajriba minbari", "Navbatdagimashg'ulotga", "Ta'lim islohoti", "Davlat talablari — hayotga" рунқларидан берилган мақолалар мактабгача таълим муассасалари ходимлари, муахассисларига назарий кўмак вазифасини ўтади.

Инсоннинг гўзаллик оламига илк одими

оиладан бошланади. "Оилада ҳам тарбия шарт — уйғунлик" (К.Тўлаганова) мақоласи шу ҳақда, Урганч шаҳридаги "Қуёшча" номли 11-болалар боғчаси мудири Н.Абдуллаева "Яйраб ўсар болалар" мақоласида ўз иш таърибалари билан ўртоқлашган. "Ўлкамизда баҳор" — муаммоли машғулотлар баёни (С.Абдуллаева) болалар боғчалари тарбиячилари учун йўналиш берувчи методик ёрдамдир. "6-7 ёшли болаларнинг мактаб таълимига тайёргарлик даражасини аниқлашда тест усулидан фойдаланиш" мақоласи ҳамда тест саволларига мисоллар ҳам соҳа мутахассислари учун мўлжалланган.

"Барҳаёт сиймо" (Ш.Турдиев) мақоласида Амир Темур бобомиз ҳақида болаларга тушунарли содда ва равшан тилда ҳикоя қилинган. "Маърифатпарвар бо-

болар мактабгача таълимни қандай тасаввур қилганлар?" (Н.Намозова) мақоласида эса маърифатпарвар жадид бобомиз Ҳожи Муиннинг илмий-назарий қарашларидан бир йўналиш ҳақида сўз юритилган, шунингдек, унинг "Меҳнаткашлар товуши" газетасининг 1919 йил 3 ноябрь, 118-сонидан босилган "Болалар боғчаси" мақоласи эълон қилинган.

Хулоса қилиб айтганда "Мактабгача таълим" журнали болалар билан ишлайдиган, улар келажаги учун қайғурадиган барча кишилар учун зарур бўлган нашрдир.



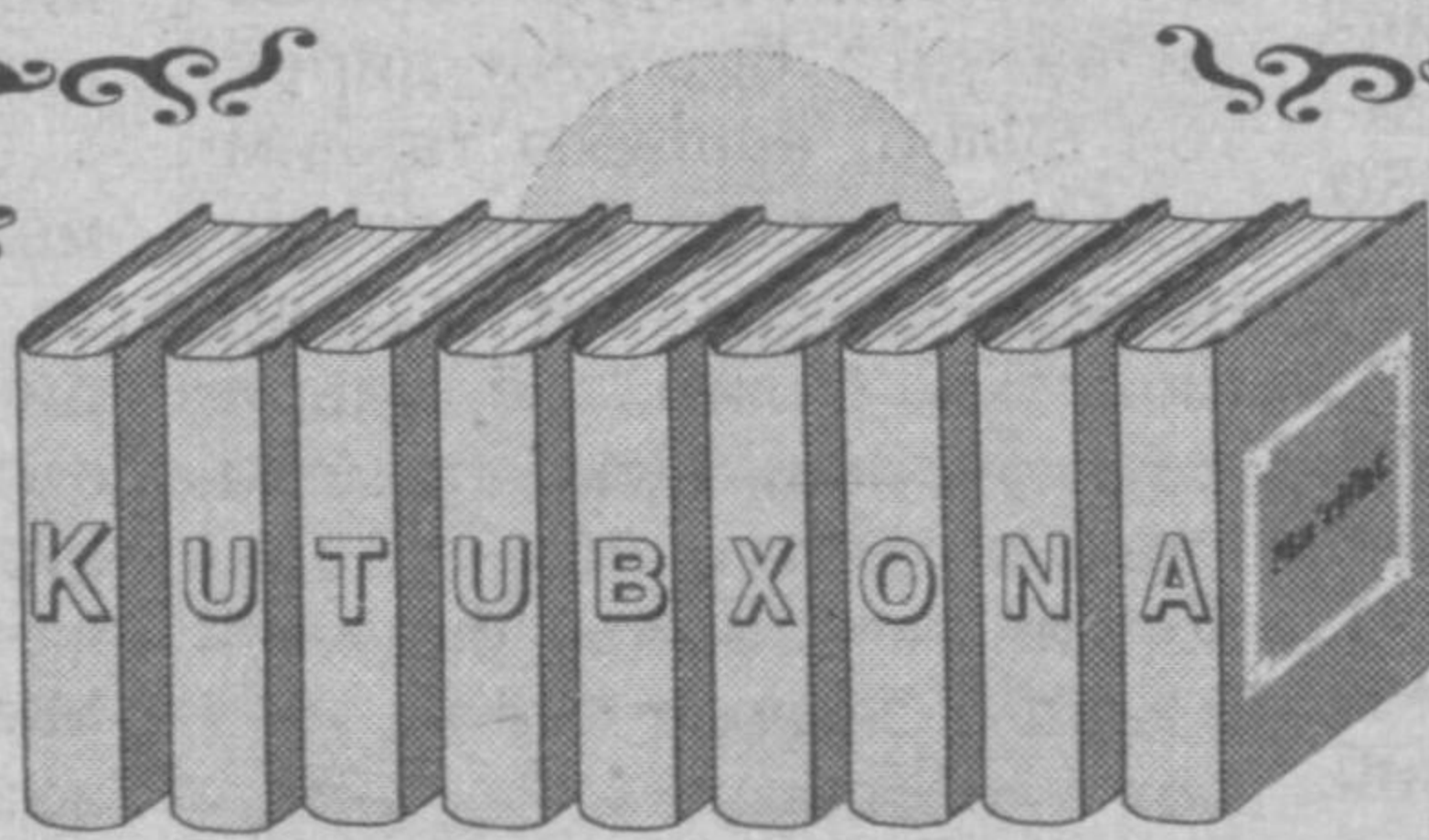
Абдулла Қаҳҳор асари қаҳрамонларидан бири ўн йилдан ошиқ вақт мобайнида тўшакка миҳланиб ётади. Бундай вақтда беморга яхши парваридан ташқари, албатта, атрофдагиларнинг нутқ маданияти таъсири муҳим аҳамият касб этади. Асарда беморнинг соғайиб кетишига кўпчилик шубҳа

ҲАМШИРАЛАРГА ҚЕРАКЛИ ҚУЛЛАМА

кўзи билан қараган бўлса-да, бироқ у бутунлай ларддан фориғ бўлиб, яна қизғин ҳаётга қайтади. Бунга беморга ўз яқинлари, қолаверса, тиббиёт ходимларининг хушмуомалалиги ҳам сабаб бўлганини айтиш жоиз. Демак, бундай вазиятларда бемор руҳиятига қараб муомала қилиш ҳам тиббиёт ходимининг иш самарасини белгиловчи омил ҳисобланади. Айниқса, кун бўйи турли кишилар билан мулоқотда бўладиган ҳамширалар фаолиятида нутқ маданияти муҳим ўрни тутади. Бу борада психология фанлари номзоди Маҳмуд Йўлдошевнинг уларга яқиндагина нашрдан чиққан "Ҳамшира меҳнати психологияси" китоби (Абу Али ибн Сино номидаги тиббиёт нашриёти, Тошкент, 2002) асқотиши шубҳасиз. Чунки беморлар ўз ҳолатидан келиб чиқиб, баъзи инжиқликларга йўл қўйса, ҳамши-

ралар ҳам ўз ўрнида ўз хулқ-атвори, кундалик ташвишлари сабаб бундай инжиқликларни қабул қила олмасликлари мумкин. Шундай ҳолларда вазиятни қандай қилиб юмшатиш кераклигини кўпчилик ҳамширалар билмасликлари ёки эълай олмасликлари кузатилмоқда. Бундай вазиятлардан силлиқ чиқиб кетишни истаган ҳамшираларга эса мазкур китоб қўл келади.

Жорий йилда мамлакатимиз тиббиёт институтларидан "Олий ҳамширалик иши" таълим йўналиши бўйича 121 нафар илк бакалаврлар битирувчи сифатида ҳаётга йўланма олишини ҳисобга олсак, бу китоб уларнинг иш фаолияти давомида ҳам дастуриламал бўлишини истаймиз. Чунки рисолада назарий руҳшунослик билан бир пайтда амалий руҳшуносликдан олинган қўлаб маслаҳатлар ҳам бор.



ЭКОЛОГИЯ НИМА?

Табиат ўз ҳолича, инсонлар ўз ҳолича, алоҳида тарзда яшай олмайдилар. Кишилик жамияти табиатнинг бир бўлаги ва унинг ажралмас қисмилигини барчамиз биламиз. Табиат фалокати-инсонлар ҳаётининг тугаши билан якун бўлиши мумкинлиги ҳақида Тавротда ҳам, Инжилда ҳам, Авестода ҳам зикр этилмаган.

Фалокат олдини олиш учун эса атроф-муҳитни ҳимоя қилиш бўйича дунёда турли кўринишда, мавзуларда, шаклда ва ҳажмда минглаб мақола, рисола, китоб ва дарсликлар чоп этилмоқда. Улар нафақат ҳар хил тил ва ёзувда, балки ўзига хос информатик маълумот узатувчи ва тез мосланувчи космик коммуникацион усуллар орқали бутун инсониятга жадал суратларда тарқатилмоқда. Бинобарин, Республикамизда ҳам бу борада қилинаётган ишлар салмоқлигини.

Жумладан яқинда Аскар Ниғматовнинг Тошкент давлат юридик институти томонидан нашр этилган "Экология нима?" рисоласи замонамизнинг энг долзарб муаммоларидан бири бўлган экология ва унинг асосий жиҳатларига бағишланади. Унда муаллиф оддий тилда, мулоқот тарзида инсон ва атроф табиий муҳит, экология ўзи нима ва бошқа фанлардан нимаси билан фарқ қилиши тўғрисида сўз юритган. Ва экологиянинг очилган ва ёки очилмаган, ечилган ёки ечилмаган, тортишувларга сабаб бўлаётган томонларини қидириб, ҳар биримиз жавоб беришимиз лозим бўлган айрим мураккаб саволларга ойдинлик киритган.

Ўқувчи ёшларга халқаро андозалар талабига мос келадиган даражада билим ва касб-хунар ўргатишда ўқитувчи-мутахассислар ўз малакаларини доимий ошириб бориши, илгор технологияларни ўзлаштириши муҳим ўрин тутади.

Дунёдаги ривожланган давлатларнинг таълим тизимлари турлича бўлиб, улар орасида ўхшаш жиҳатлар учраса-да, лекин айнан такрорланмайди. Биз фақат бу тизимлардан юқори самара берадиган, ижобий томонларни олишимиз мумкин. Масалан, ҳозирда жуда оммалашган Германиянинг дуал ва модулли ўқитиш тизимини, Канаданинг виртуал ўқитиш тизимини, Кореянинг масофадан

қаторда, касб-хунар коллежларида компьютерлар Интернет тизимига уланган бўлиб, бу жаҳоннинг илгор педагогик технологияларига йўл очиб бормоқда.

Албатта, инсоният ҳамма вақт олдинга интилиб яшайди. Вилоятда фаолият кўрсатаётган академик лицейлар ва касб-хунар коллежлари учун ўрта махсус, касб-хунар таълими бошқармаси томонидан Са-марқанд банк коллежи ва "InComSoft" илмий ишлаб чиқариш лабораторияси билан ҳамкорликда информацион технологиялар бўйича амалий курслар серияси ўзбек тилида тайёрланди. Ушбу махсус курсларда "Windows-2000" операцион

ТАРИХИЙ ФАКТЛАР ТАҲЛИЛИ

иборат:

- I. Давлат ва ижтимоий тузум.
- II. Иқтисодийёт: ижтимоий бозор иқтисодийёти тузилмалари.
- III. Таълим. Фан.
- IV. Маданият ва ижтимоий ҳаёт.
- V. Соғлиқни сақлаш. Спорт.
- VI. Ўзбекистон жаҳон ҳамжамиятида.

Кўриб турганингиздек, китобда Республикамизнинг ижтимоий-сиёсий, маданий-маърифий каби барча жабҳалари қамраб олинган. Ушбу йилноманинг фазилатларидан бири шундаки, Республикамиз ҳаётига дахлдор барча катта-кичик воқеалар аниқ санаси ва шарҳи билан берилган. Уларда Ватанимиз ўз олдига қўйган вазифадан келиб чиққан ҳолда ҳукуматимиз қабул қилган қарорларнинг ҳай тарзда ижро этилгани ва этилаётгани, қандай муваффақиятларга эришилгани олдидан яна қандай ишлар қилиниши керак — барчаси ҳақида аниқ ва лўнда маълумотлар олиш мумкин. Китобни барақма-барақ ўқиш борар экансиз, Ўзбекистон Республикасининг ўтган ўн йил давомидаги шонли кунлари қайтадан кўз ўнгингизда намойён бўлади. Хусусан, чет эллар билан йўлга қўйилган

Инвестицияга кенг йўللар очилмоқда. Шаҳар қишлоқларимиз жамоли ўзгармоқда, ёшлар ҳаёти ва онгида катта маънавий ўзгаришлар рўй бермоқдаки, булар барчаси ўзбек халқининг ўзи танлаган йўлда собитқадамлик билан олға бораётганидан дарак бериб турибди.

"Истиқлол йилномаси" кенг китобхонлар оммасига мўлжалланган. Юқори синф ўқувчиларидан тортиб давлат муассасаларида меҳнат қилаётган ҳар бир ходим учун у баъйни дастуриламал каби хизмат қилади. Йилномада турли йилларда бўлиб ўтган воқеа-ҳодисаларнинг аниқ санаси ва қисқача мазмуни берилиши ўқувчи учун соҳалар бўйича истаган манбани осонлик билан топишга имкон беради. Айниқса, абитуриентлар кўнлаб тест саволларига ушбу китобдан жавоб топиши, шубҳасиз.

Шуни алоҳида таъкидлаш жоизки, Республикамиз ижтимоий-сиёсий, иқтисодий ва маданий ҳаётига бағишланган ушбу нашр ўзининг тўлақончилиги, ҳужжат ва маълумотларга бойлиги билан ноёб ва бе-назир.

Назира ЖўРАЕВА

КОМПЬЮТЕР ДАСТУРЛАРИ ЎЗБЕК ТИЛИДА

ўқитиш тизимини, Интернет, факс, модем, электрон почта, электрон кутубхона каби замонавий технологияларни ўқув жараёнида қўллаш таълим сифатини оширишда янги имкониятларни очади.

Бу соҳада Самарқанд вилоят ўрта махсус, касб-хунар таълими бошқармаси томонидан ҳам анча ибратли ишлар амалга оширилмоқда. Жумладан, таълим жараёнида, назарий-амалий машғулотларда мазкур технологик воситаларни асосий ва қўшимча ўқув материали сифатида қўллаш учун умумтаълим ва мутахассислик фанлари бўйича 60 дан зиёд компакт дисклар таълим жараёнида фойдаланилмоқда. Таълим жараёнини такомиллаштириш, масофадан бошқариш ва ўқишни йўлга қўйиш мақсадида кўпгина таълим муассасаларида электрон кутубхоналар яратилиб, ўқитувчилар ва ўқувчилар бундан самарали фойдаланишмоқда. Шу билан бир

тизимини, "Word-2000" (матнлар дастури) "Excel-2000" (электрон жадвал), "Internet Explorer 5.0" "Microsoft Outlok-2000" (воқеа-ҳодисаларни режалаштириш дастури) "Adobe Page Maker 6.52" (матнни саҳифалаш дастури), "Corel Draw 10.0" (чизмалар билан ишлаш редактори), "Adobe Photoshop 6.0" (фотосуратлар редактори), "Front Page 2000" (web-дизайн дастури) каби мавзулар бўйича маълумотлар берилган бўлиб, илк таянч кўникмаларни ҳосил қилишда ўрганувчиларга жуда қулайдир. Келгусида ушбу илмий-ишлаб чиқариш лабораторияси билан таълим тизимини ривожлантириш ва ўқув жараёнига интерфаол усулларни жорий қилишда яна ҳамкорлик қилиш режалари тузилмоқда.

М.БОЛИЕВ,
Самарқанд вилоят **ЎМКХТ** бошқармаси инновация ва илгор педагогик технологиялар бўлими бошлиғи

Отам ҳақида ёзишдан олдин кўп ўйладим. Отам эл-юрт орасидаги ўрни, ҳурмат-эътибори, замонасининг маърифатпарвар киши бўлганлигини ҳис этиб бу ҳақда ёзишга журъат қилдим.

Отамни ёшлигиданоқ билладиганлардан суриштирсам ва бизларга сўзлаб берган хотираларимга асослансам, ёшлигидан ўта зийрак, меҳнатсевар, билимга интилувчан бола сифатида улғайган. Илм олмоққа интилиш ҳар бир киши учун фарздор, деган нақлга қатъий амал қилиб, қийинчиликлар, турмуш жуда оғир бўлишига қарамасдан билим олишга интилган. Отадан эрта ажралган, етим ўсган ёш Нурали 30-йилларнинг қийинчиликларини мардонавор енгиб, ўқишни давом эттирган. 1941-1945 йиллар Самарқанд педагогика институтида сиртдан ўқиб, шаҳардаги ўқитувчилар билим юртига ўқишга юборилди. Ўқув юрти муваффақиятли тугатиб, қишлоғига қайтди.

Маҳмудхўжа Бехбудий "Мақтаб — дунё иморатларининг энг муқаддаси ва кадр-лисидир. Мақтабнинг чин ва ҳақиқий маъносини билган миллатлар жонлари, моллари билан ҳиммат ва ғайратларини сарф этиб миллатнинг тарққиёти ривожига ижтиҳод

қилурлар", деб бежиз айтмаган. Ёки Абдурауф Фитрат таъбири билан айтганда: "Ҳаёт йўлида биринчи масала мактаб масаласидир".

Маърифатга интилиш халқимизнинг азалий фазилатларидан бири ва илму тафаккур кишини эзгуликка бошлайдиган беқиёс куч ва у одамлар қалбига нур, онгига зиё, хонадонига файз-барока келтирадиган буюк мўъжиза. Зеро, умрини маърифатга бағишлаган инсонлар истеъдодли ёшларга касб ва билим чўққисини егаллашда



ё саодат — ё фалокат масаласи эканлигини" такрор ва такрор уқтириб турар эдилар.

Отам қишлоқни ободонлаштиришга ҳам фидойи инсон сифатида ўз ҳиссасини қўшди. Бундан ташқари қишлоқда катта савдо дўконининг қурилишига ҳам бош бўлди. Чандир қишлоқ кўчаларини текислаш, асфальтлаш, газ, сув таъминотини яхшилаш ишларига, шунинг-дек, "Нуронийлар" чойхонаси қурилишида ўзи ташаббус ва фаоллик кўрсатди. Узоқ йиллик ўқитувчилик фаолиятида у до-

Xotira

муайян иш билан банд бўлишимизни доимо назорат қилиб, қилаётган ишларимизни суриштирар ва ўзлари кўриб баҳо берар эди.

Оилада етти фарзандни улғайтириб, тарбиялаб вояга етказди, ўқитиб олий маълумотли қилди. Ҳозирги пайтда улар турли соҳаларда меҳнат қилиб, Нурали ота Рўзиназаровнинг ишларини давом эттирмоқдалар. Зеро, ота бошлаган хайрли ишларни давом эттириш ҳар бир фарзанд учун муқаддас бурч, фахр ва бахтдир. Нурали ота Рўзиназаров босиб ўтган ҳаёт йўли ёшлар учун ҳам ибратлидир. Отам нафақат қаттиққўл, шунингдек, жуда меҳрибон, меҳнаткаш инсон эдилар. Отамнинг умри биз учун ҳаёт мактаби эканлигини ҳар томонлама идрок этаман.

Ҳа, умр оқар дарё дегани бежиз эмас экан. Отам ҳаётини ўйлар эканман, у кишининг ёрқин ҳаёт йўли нафақат биз фарзандлари, у киши тарбиялаб вояга етказган минг-минглаб ўқувчиларининг хотирасида ҳам бир умр сақланади.

Ш.РЎЗИНАЗАРОВ,
юридик фанлари доктори,
профессор

МАЪРИФАТГА БАХШИДА УМР

қанот бахш этиши, шубҳасиз.

Отам Нурали Рўзиназаров ўқишдан ажралмаган ҳолда педагогик фаолиятини олиб борган. Дастлабки фаолиятини 20-сон бошланғич мактабда бошлади. 1949-1950 йилларда Пастдарғом тумани Кўшқудуқ қишлоғидаги 29-сон етти йиллик мактабда директор, 1951-1953 йилларда Чархин тумани Тельман қишлоғидаги 13- етти йиллик мактабда ўқитувчи бўлиб ишлади.

Отам Нурали Рўзиназаров 1951 йилда Чандир қишлоғи болалари учун қишлоқда ҳашар йўли билан янги мактаб биносини қуриб битказди ва унга биринчи директор бўлиб, ёшларга таълим-тарбия беришга ўзининг муносиб ҳиссасини қўшди. Қишлоқда билим, зиё, маърифат жонкуяри бўлиб танилди. Отам раҳматли Абдулла Авлонийнинг "Тарбия биз учун ё ҳаёт — ё мамот — ё нажот — ё ҳалокат —

имо ёшларга ўзаро ҳурмат, меҳр-оқибат, инсонпарварлик, меҳнатга, Ватанга муҳаббат, иймон, эътиқод, қатъиятлик туйғуларини сингдириб борди.

Отам болалар тарбиясида меҳнатнинг ролига жуда катта эътибор берар эди. Қариндошларга, ака-укаларга эътиборли бўлишни ўзаро ҳурмат, эҳтиром кўрсатишни ҳам доимо уқтириб турарди. Меҳнат ҳам ўзига хос тарбия воситаси эканлигига эътибор бериб, бизларнинг доимо

ОЛИМА, ПЕДАГОГ, МУРАББИЙ



1937 йилда Малика Раҳмонова Низомий номидаги Тошкент Давлат педагогика институтининг (ҳозирги университет) педагогика факультетини тамомлагач, ўз фаолиятини институтнинг педагогика ва психология кафедрасида ўқитувчиликдан бошлади.

Ўша пайтларда психология бўйича маърузалар фақат рус тилида Платон Иванович томонидан ўқитилар эди. Малика опа эса ушбу олим маърузалари асосида ўзбек гуруҳларига таълим бера бошлади.

Аста-секин у мустақил равишда умумий, педагогик психологиядан маърузалар ўқий бошлади. Ўзининг бир неча ўн йиллик фаолияти давомида Малика опа институтнинг

мактабгача тарбия факультетида мактабгача таълим муассасаларига тарбиячи ва услубчилар тайёрлашга ўзининг муносиб ҳиссасини қўшди.

1968 йилда номзодлик диссертациясини муваффақиятли ёқлади ва унга психология фанлари номзоди, 1980 йилда эса унга психология кафедраси доценти унвони берилди.

Олиманинг қатор йиллар давомида олиб борган тадқиқотлари асосан психология фанини олий ва ўрта махсус ўқув муассасаларида ўқитишни такомиллаштиришга қаратилгандир. Унинг "Психология курсида кўрсатмаллик" номли ўқув қўлланмаси педагогик ўқув муассасаларида психологияни ўқитиш ва мазкур фани илмий мулоҳазалар билан бойитишга хизмат қилади.

Малика опа "Педагогика билим юртларида психология фанини ўқитиш методикаси" курсини юқори маҳорат, сидқидиллик билан олиб борганлиги

боис талабалар ва ҳамкасблар ҳурмати, меҳр-муҳаббатига сазовор бўлди.

Малика опа ҳозирги кунда 90 ёшни қаршилаб, нафақада бўлишига қарамасдан, доимо изланишда, жамоа ишларида ҳамisha фаол. Бунинг исботи сифатида опанинг 1999 йилда "Мовароуннахр" нашриёти томонидан чоп этилган "Оилага совға" китоби педагогик жамоатчилик томонидан юқори баҳоланганлигини алоҳида таъкидлаш мумкин.

Малика опа камтар инсон. У юқори малакали психолог ва ёшлар мураббийси сифатида илмий доираларда юксак ҳурматга сазовордир. Юзлаб шогирдлари бугун республикамизнинг мактабгача таълим муассасаларида фаолият кўрсатмоқдалар.

М.ДАВЛЕТШИН,
"Умумий психология" кафедрасининг профессори,

А.ГАФФОРОВ,
"Умумий психология" кафедрасининг доценти

Fanimiz fidoiylari

Эсанулло ёшлигидан табиий фанларга қизиққанлиги туфайли 1959 йили Низомий номидаги Тошкент Давлат педагогика институти физика ва умумтехника фанлари факультетига ўқишга кириб, уни тугаллагач, Андижон вилояти Хўжаобод туманидаги 43-мактабда (ҳозирги Жалолқудуқ тумани 17-мактаб) ёшларга физикадан дарс бера бошлади.

Кейинчалик Андижон вилояти халқ таълими бўлимнинг таклифи билан вилоят ўқитувчилар малакасини ошириш институти физика-математика



ёнини кафедра тизимига ўтказишнинг ташкил этувчиларидан ҳисобланади. Унинг раҳбарлигида малака ошириш ин-

кенгашида "Ўрта мактабда физика ўқитувчиларининг ўқув кабинетидан самарали фойдаланишга методик тайёргарлигини ошириш" мавзусида номзодлик диссертациясини ёқлади. 1993 йили унга доцент илмий унвони берилди.

Э.Дадахўжаев малака ошириш институтлари тизимини ислоҳ қилишда республикада биринчилардан бўлиб физика, математика фанлари бўйича ўқув жара-

ИЛМДАН РЎШНОЛИК ТОПГАН ОЛИМ

кабинети методисти, кейинчалик физика кабинети мудири вазифаларида фаолият кўрсатди. Масъулиятни ҳис қилган Э.Дадахўжаев халқ таълимининг бошқариш сирларини ўрганди. Илғор, ташаббускор физика ўқитувчиларининг дарсларида бўлиб, уларнинг ишларини оммалаштиришга жиддий аҳамият бериб келди. Мактаб физика ўқитувчиларининг ишларини атрофлича ўрганди ва келажак илмий-педагогик экспериментларини уларнинг базаларида амалга оширди. У барча иш фаолиятини, илмий изланишларини мактабда, амалий машғулотларга яқиндан боғлаб олиб борди.

Э.Дадахўжаев Низомий номидаги Тошкент Давлат педагогика институтининг физика ўқитиш методикаси кафедрасида педагогика фанлари доктори, профессор Б.Мирзааҳмедов раҳбарлигида илмий изланишларини давом эттирди. Челябинск педагогика институтининг илмий

ститутининг иш функциялари тубдан ислоҳ қилинди (1993 йил). Қисқа 2 йил давомида 6 та кафедра, 10 та услубий бўлим ва институт қошида 5 та илмий ходимлар штатидан иборат республикада ягона "Халқ таълими музейи" ташкил қилинди.

У республика ХТВнинг физикадан ўқув-методик кенгашининг энг фаол аъзоси сифатида хизмат қилиб келган. Халқ таълими ривожига қўшган хизматлари учун "Халқ таълими аълочиси", "Халқ таълими фидойиси" унвонлари билан тақдирланган.

Эсанулло Дадахўжаев ҳаётда, иш фаолиятида кўп қийинчиликларга ҳам дуч келган. Бироқ, уларни иродаси, сабрқаноати, меҳнати билан енгиб ҳамда ўзига хос, инсонга фақат яхшилик қилиш, яхшилик қўлидан келмаса ёмонлик қилмаслик тамойилига амал қилиб яшамоқда.

Ф.КАРИМОВ

Гиёҳванд моддаларнинг гайриқонуний айланишига қарши кураш ҳамда истеъмол қилинишининг олдини олиш умумжаҳон аҳамиятига молик масалалар ҳисобланади.

Бирлашган Миллатлар Ташкилоти томонидан "26 июнь — халқаро гиёҳвандликка қарши кураш куни" деб эълон қилинган ва бу сана ҳар йили жаҳон ҳам-жамияти томонидан кенг нишонланиб

келинади.

Шу сабаб қуйида "Bioekosan" Республика ёшларининг ўқув-услубий мажмуаси томонидан ишлаб чиқилган ёзги оромгоҳларда "26 июнь — халқаро гиёҳвандликка қарши кураш куни"га бағишлаб ўтказиладиган "Оғусиз дунё сари" фестивали намунавий сценарий-сини келтирмоқдамиз.

ОҒУСИЗ ДУНЁ САРИ

ТАШКИЛИЙ ҚИСМ

Майдон гиёҳвандликка қарши кураш ва гиёҳвандлик иллатларини акс эттирувчи плакатлар ва шиорлар билан безатилган. Бундан ташқари, ҳар бир гуруҳ ўз номи ва шиори-га эга бўлиши, иккитадан гиёҳвандликка оид расмлар чизилган плакатлар топшириши керак.

ЭРТАЛАБКИ НОНУШТАДАН СЎНГ

Барча гуруҳлар очилиш маросимида қатнашиш учун оромгоҳ майдонида саф тортадилар. Бош етакчининг фестивал ҳақидаги кириш сўзларидан сўнг, тадбир очиб деб эълон қилинади. Майдонга Ватанимиз мадҳияси садолари остида 4 нафар байроқдорлар кириб келадилар. Барча жўр бўлиб мадҳияни куйлайди. Сўнгра бош етакчи фестивалнинг мақсад ва вазифалари, ҳайъат аъзолари ҳамда шартлари билан таништириб ўтади. Гуруҳ сардорлари бош етакчига галмагалдан ўз гуруҳларининг тайёрликлари ҳақида маълумот бериб, рапорт топширадilar.

КУНДУЗГИ УЙҚУДАН СЎНГ

II босқич оромгоҳ сахнасида давом этади. Бунда гуруҳлар 3-4 шарт бўйича беллашадилар.

КЕЧКИ ОВҚАТДАН СЎНГ

Якуний босқичда гуруҳлар яна майдонда саф тортишадилар. Оромгоҳ бошқаруви раиси уларни муваффақиятли якун билан табриқлаб, фолибларни аниқлаш учун сўзни ҳайъат раисига беради. Фолиблар эълон қилиниб, совғалар берилгач, Республикаимиз мадҳияси садолари остида майдонга байроқдорлар кириб келади. Мадҳиядан сўнг бош етакчи фестивални ёпиқ деб эълон қилади.

БОШ ЕТАКЧИ

Азиз болажонлар, мухтарам Президентимиз айтганларидек, бугунги кунимизнинг долзарб вазифаларидан бири ёшларимизнинг янада билимли, жисмонан соғлом, маънавий баркамол, кучли ва Ватанимиз равнақи йўлида фидойи инсонлар қилиб тарбиялашдир. Бугун оромгоҳимизда ўтказилаётган тадбиримиз ҳам ана шу хайрли ишларимизнинг давомидир. Демак, "Оғусиз дунё сари" фестивалимизни очиб деб эълон қиламан. (Давлатимиз мадҳияси янграйди, болалар жўр бўладилар, байроқдорлар Республикаимиз байрогини май-

дон бўйлаб олиб ўтадилар).

БОШ ЕТАКЧИ

Бугунги фестивалимизда ҳар бир гуруҳ 4 шарт бўйича ўзаро беллашади.

I шарт: Гуруҳ номи ва шиори.

II шарт: Гиёҳвандлик мавзусида плакатлар.

III шарт: Шу мавзудаги сахна кўриниши.

IV шарт: Мавзуга мос кўшиқ, шеър ёки реклама роликлари тайёрлаш.

Шартларимиз 10 баллик системада баҳоланади.

Демак, гуруҳлар тайёр бўлса, I шартимизни бажаришга киришамиз, марҳамат. (Гуруҳ сардорлари бош етакчига рапорт топшира бошлашади).

I гуруҳ сардори: Жаноб бош етакчи. Бизнинг: **Гуруҳ болалари:** "Соғломжон".

Гуруҳ сардори: деб номланган гуруҳимиз "Оғусиз дунё сари" фестивалига:

Гуруҳ болалари: "Тайёр". **Гуруҳ сардори:** Бизнинг шиор:

Гуруҳ болалари: "Оғудан инсонлар йўқотган йўлин, Оғусиз дунёга қадам ташлагин".

Гуруҳ сардори: Рапорт топширилди. Рапорт топширувчи I гуруҳ сардори _____.

Бош етакчи: — Рапорт қабул қилинди.

(Шу тариқа бошқа гуруҳ сардорлари ҳам галмагалдан рапорт топширадilar. Ўз навбатида бош етакчи ҳам оромгоҳ бошқаруви раисига рапорт топширади).

Оромгоҳ бошқаруви раиси Азиз болалар, мана I-шарт бўйича гуруҳингиз номи ҳамда шиори билан танишиб чикдик. Энди ҳакамларимиз гуруҳингиз номи, шиори ҳамда сизлар томонингиздан чизилган плакатларни кўриб, баҳолаб чиқадилар.

Кундузги уйқудан сўнг оромгоҳ сахнасида II босқич шартлари давом этади.

ОРОМГОҲ САХНАСИ

Олиб борувчи:

Ҳаёт — мураккаб. Унда яхшилик ҳам, ёмонлик ҳам ёнмаён. Фестивалимизнинг III шартда асримиз вабосига айланган гиёҳвандлик мавзусидаги сахна кўринишлари ўрин олган. Биз ҳозир гуруҳлар томонидан тайёрланган сахна кўринишларидан ўзимизга тегишли хулосалар чиқариб оламиз, деган умиддаман.

Демак, навбат III шартимизга.

Бу шартимизни биринчи бўлиб I гуруҳ болалари бошлаб берадилар, марҳамат.

Шу тариқа барча гуруҳ ўз чиқишларини амалга оширадilar.

ОЛИБ БОРУВЧИ

Мана, азиз дўстлар III шартимиз ҳам ниҳоясига етди.

Кечки овқатдан сўнг IV шарт бўйича беллашув бошланади.

ОЛИБ БОРУВЧИ

Навбатдаги шартимизда гуруҳлар томонидан тайёрланган кўшиқлар, шеърлар ёки реклама роликларини томоша қиламиз.

Навбатма-навбат гуруҳлар ўз чиқишларини якунлашади. Шу тариқа барча босқич шартлари бажарилиб бўлинади. Сахнадаги шартлар тугач, гуруҳ аъзолари маълум вақтдан сўнг, оромгоҳ майдонида ёпилиш маросимида саф тортадилар. Унда гуруҳ сардорлари яна бош етакчига гуруҳининг ёпилиш маросимида саф тортанликлари ҳақида рапорт топширадilar. Бош етакчи ҳам ўз навбатида оромгоҳ бошқаруви раисига рапорт беради.

I гуруҳ сардори: Жаноб бош етакчи, бизнинг

Гуруҳ аъзолари: "Соғломжон"

Гуруҳ сардори: деб номланган гуруҳимиз "Оғусиз дунё сари" шиори остида ўтказилган фестивалнинг ёпилиш маросимида саф тортиди. Бизнинг шиор:

Гуруҳ аъзолари: "Оғудан инсонлар йўқотган йўлин, Оғусиз дунёга қадам ташлагин".

Гуруҳ сардори: Рапорт топширилди. Рапорт топширувчи I-гуруҳ сардори...

Бош етакчи: Рапорт қабул қилинди.

(Ҳамма гуруҳ сардорлари шу тариқа рапорт топшириб бўлганларидан сўнг, бош етакчи ҳам ўз навбатида оромгоҳ бошқаруви раисига рапорт топширади).

Бош етакчи

Хурматли дам олувчи дўстлар! 26 июнь — Халқаро гиёҳвандликка қарши кураш куни муносабати билан "Оғусиз дунё сари" шиори остида ўтказилган фестивалимиз ниҳоясига етди. Ўйлаймики, сиз барча босқич шартларидан муваффақиятли ўтдингиз. Шунингдек, ўтказилган фестивалимиздан озми-кўпми қониқиб ҳосил қилдик, чунки жамиятимиз ёшлари олдида турган жиддий муаммолардан бири — гиёҳвандлик иллатига барҳам беришдир.

Инобат МАМАСОЛИЕВА,
"Биозексан" республика ёшларининг ўқув-услубий мажмуаси руҳшуноси

ЖИДДИЙ ЭЪТИБОР ҚАРАТИЛДИ

Навий вилояти таълим ва фан ходимлари касоба уюшмаси қўмитаси ўқувчилар дам олиш мавсумининг очилишига жиддий эътибор қаратди.

Бунинг натижаси ўлароқ, 35 та болалар дам олиш масканлари очилди. Мавсумда ушбу оромгоҳларда 2000 нафар ўқувчиларнинг дам олишлари учун 27 млн. сўм маблағ ажратилди.

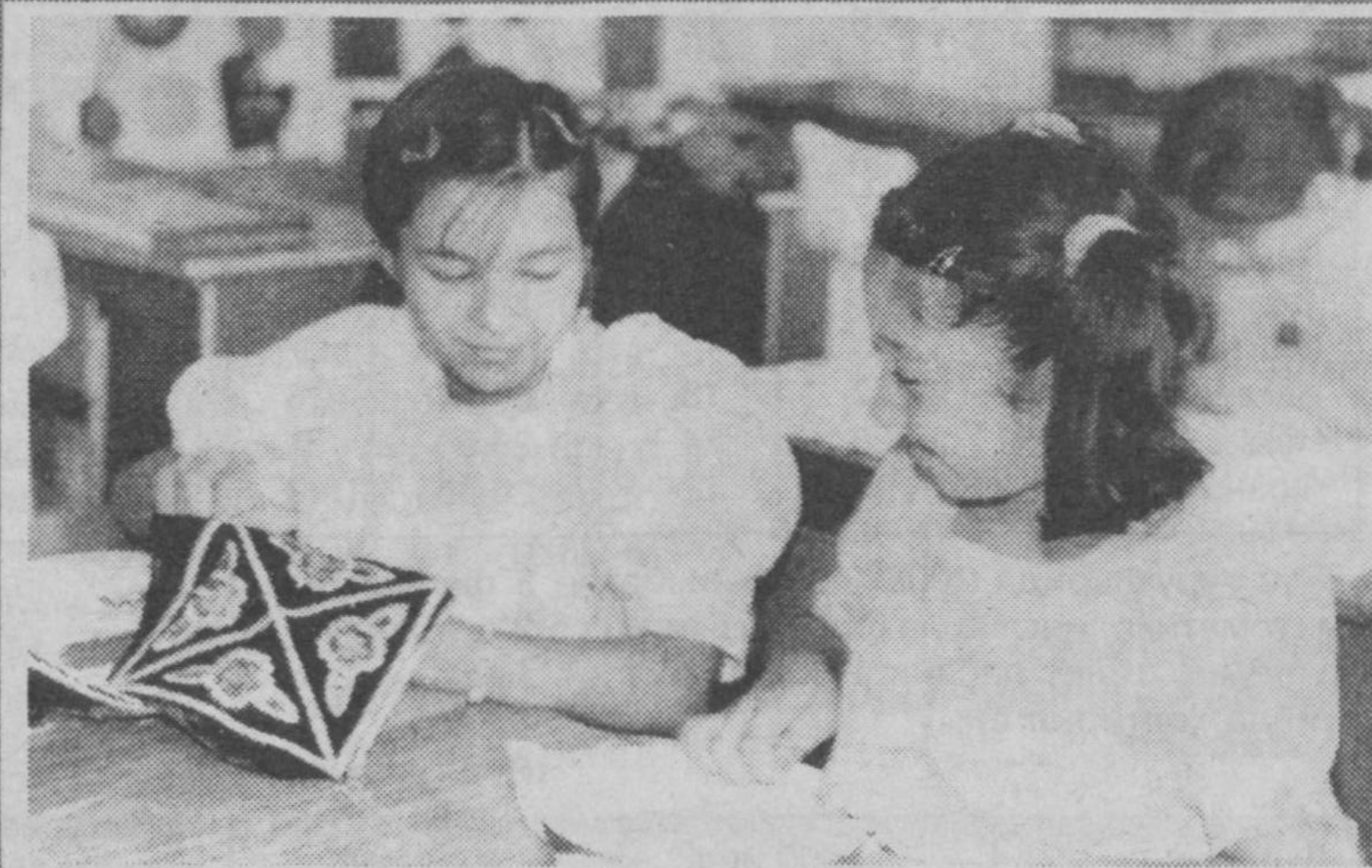
Оромгоҳларни мавсумга тайёрлашда Навбахор, Нурота, Кармана, Зарафшон шаҳар халқ таълими бўлиmlари томонидан намунали ишлар амалга оширилган. Шу боис Зарафшон шаҳридаги "Маржон", Кармана туманидаги "Гунча", Хатирчи туманидаги "Бойчечак", Навий туманидаги "Қувонч",

Навбахор туманидаги "Қалдирғоч" ҳамда Қизилтепа туманидаги 1-оромгоҳларда юзлаб болажонлар узлуксиз таълим олиб, ҳар хил тўғарақларда иштирок этиб, тарихий музейларга саёҳат қилишмоқда.

Оромгоҳларда дам олаётган фарзандларимизнинг тафаккур ва тасаввурини кенгайтиришда 240 нафар ўз соҳасининг фидойиси бўлган педагог, тарбиячи, психолог, тиббиёт ходими, ошпаз, кутубхоначи ва спорт мураббийлари астойдил меҳнат қилишмоқда.

Шунингдек, ота-онасиз қолган ҳамда кам таъминланган оила фарзандларидан 20 нафари бепул дам олишади.

Ўткир ПЎЛАТ



Тўғарақлар ўқувчилар фаолиятида муҳим омил ҳисобланади. Тошкент шаҳар Шайхонтоҳур туманидаги 324-мактаб жамоаси ўғил-қизларнинг ёзги таътилини унумли ўтказиш мақсадида илм маскани қошида қатор тўғарақлар ташкил этди. Айни пайтда уларда кўплаб ўқувчилар бўш вақтини мазмунли ўтказишяпти.

Суратларда: тўғарақлар аъзолари турли машғулотлар билан банд.

Бурхон РИЗО олган суратлар.



КАСБ ТАЪЛИМИГА ЭЪТИБОР

Жиззах давлат педагогика институтида вилоят халқ таълими ва ўрта махсус, касб-хунар таълими бошқармалари ҳамда мазкур институт ҳамкорлигида "Меҳнат ва касб таълими муаммолари" мавзусида илмий-амалий анжуман бўлиб ўтди. Унда кун тартибидаги мавзу юзасидан мутасадди ташкилот раҳбарлари, таниқли олимлар ўз фикр ва мулоҳазалари билан ўртоқлашдилар.

Анжуманда ўрта-махсус, касб-хунар таълими тизимини такомиллаштириш, касб-хунар коллежларида амалий ўқитиш сависини ошириш масалалари, таълим тизимида янги педагогик технологияларни амалга ошириш муаммолари, бўлажак меҳнат ва касб таълими ўқитувчи-

сининг компьютер билан ишлаш маҳоратини ошириш масалалари, бўлгуси меҳнат ва касб таълими ўқитувчиларини тайёрлаш муаммолари, узлуксиз таълим тизимини такомиллаштиришда янги ахборот технологиялари усуллари ҳақида, шунингдек, Англияда ўқитувчиларни касбга йўналтириш тажрибаси ҳақида про-

фессор-олимлар, ёш тадқиқотчилар маъруза қилдилар.

Кун тартибидаги маърузалар қизгин баҳс мунозараларга уланиб кетди. Касб таълимига эътиборни ошириш давр талаби эканлиги анжуман қатнашчилари томонидан алоҳида эътироф этилди.

А.СОДИҚОВ

Anjuman

Бугун кунга келиб, дунё бўйича ОИТСдан 40 млн. киши зарарланиб, 25 млн. киши оламдан ўтди. Дунёда тахминан бир кунда ОИТСдан 18000 киши зарарланиб, 10000 одам шундан вафот этмокда.

Жаҳон соғлиқни сақлаш ташкилоти бир неча йиллар олдин ОИТС(СПИД) касаллиги ҳақида тахминий маълумотлар тарқатганди. Унга кўра, "XXI аср вабоси, тарқала бошлагандан то 2000 йилгача Ер куррасида энг камида 30-40 млн.га яқин эркак, аёл ва болалар ОИТС кўзгатувчиси билан зарарланиши айтилганди.

Агар бу натижалар ҳақиқатдан холи бўлмаса, 90-йилларнинг охирига бориб, катта ёшдагилардан 1,5 ярим млн.га яқин киши ОИТС касаллиги билан ҳалок бўлиши мумкин эди. Бу кўрсаткичнинг тахминан ярми Африкага ва учдан бир қисми Осиёдаги ривожланаётган мамлакатларга тўғри келиши айтилганди. Бу келтирилган тахминий маълумотлар қанчалик ўзини оқлаши ҳаммада қизиқиш тугдирганди. Кимдир лоф деди. Кимдир бепарволик қилди. Яна бировда шубҳа пайдо бўлди. Хуллас, айтилган вақт етиб келди. 2001 йил декабр ойи ҳамма тахминларни муҳокама қила бошлади. Яхшиси унинг тўғри ёки нотўғри эканлигини рақамлар орқали кўриб чиқсак.

Дунё бўйича ОИТС касаллигини юқтириб олганлар сони:

жами — 40 миллион
эркаклар — 19,6 миллион
аёллар — 17,6 миллион
15 ёшгача бўлган ўсмирлар — 2,8 миллион

2001 йил давомида мазкур хасталикни юқтириб олганлар сони:

жами — 5 миллион
эркаклар — 2,4 миллион
аёллар — 1,8 миллион
15 ёшгача бўлган ўсмирлар — 800 минг

2001 йилда ундан нобуд бўлганлар: жами — 3 млн.
эркаклар — 1,3 млн.
аёллар — 1,1 млн.
15 ёшгача бўлган ўсмирлар — 600 минг

Агарда бу рақамларни мушоҳада қилиб кўрадиган бўлсак, нақадар дахшатли фожеа эканлиги кўз олдимизда намойи бўлади. Яхшиси, мушоҳадани ўзингизга қолдирсак-да, унинг тарихига бир назар ташласак.

"XXI АСР ВАБОСИ" ҚАНДАЙ КАСАЛЛИК?

Афсуски, ҳозирча ОИТСга қарши бирон-бир самарали дори-дармон ишлаб чиқилгани йўқ. Унинг иммун система (химоя тармоғи) хусусиятларига тўхталадиган бўлсак, у тана тўқимасининг ҳамма ерида тарқалади, ҳужайралар тўқималарда доимий ҳаракатда бўлиб, лимфоцит орқали қонга ва аксинча, қондан тўқиммага ўтиб туради, у ўзига тегишли бўлган ҳар қандай антигенга қарши эффектор ҳужайралар орқали антитело заррачаларини ишлаб чиқаради.

Иммун системасининг ички муҳит фаолиятини доимо бир хилда сақлаб турувчи функционал ҳужайраларга эга. Шунинг учун ҳам бунга қарши бирон-бир дори-дармон ишлаб чиқилганича йўқ.

ЯШИРИНЧА ТАДҚИКОТЛАР ВА БАШОРАТЛАР

ОИТС дастлаб АҚШда яшовчи бесоқолбозларда кузатишга бўлиб, дастлаб хасталик синдроми бутунлай жумбоққа ўхшаган эди.

Бу ҳолатни исботлаш учун кўпгина тахминлар вужудга келди.

Бир гуруҳ олимлар ОИТСни кўзгатувчи вируслар, "Энштейн-Барр" — вируси таъсирида келиб чиқиши мумкин деб тахмин қилишди. Иккинчи гуруҳ олимлар эса уни келтириб чиқарувчи, В-юкмили сариқ касаллиги деб башорат қилишди.

Шундай бир вазиятда икки қитъа олимлари яширинча тадқиқот бошлашди.

АМЕРИКА ИЗЛАНИШИ

АҚШ миллий онкология институтидаги олимлар Роберт Галло ва Гарвард университети тиббиёт мактаби ходимлари Макс Эссексларнинг айтишича, киши Т-лимфоцитларни чексиз кўпайтирувчи, Т-лейкемия пайдо қилувчи HTLV-I Human T-Leukemia ретровирусининг маълум бир тури ОИТСни келтириб чиқариши мумкин экан.

Лекин кейинги тадқиқотлар шуни кўрсатдики, HTLV-1 вируси касалликнинг келиб чиқишига сабаб бўлувчи шунчаки бир ёрдамчи омил эканлиги исботланди.

ПАРИЖ ТАДҚИКОТИ

Париждаги Пастер номли ин-

ститутда Л.Монто-ньюе бошчилигида бир гуруҳ олимлар ОИТС-ни лимфоцитларни ҳалокатга олиб борувчи вируслар пайдо қилади, деган фикрни илгари суришди. Л.Монто-ньюе бу вақтда ОИТС билан оғриган беморнинг лимфотин тугунчасидан лимфоцитларни ажратиб олиб, вирусни текшириш учун кўпайтира бошлаганди ва орадан 15 кун ўтиб ҳужайрадан ретровирусларга хос бўлган қайта транскриптаза ферментини аниқлади.

Л.Монто-ньюе ўша воқеаларни кўз олдида ўтказиб шундай деганди: "Биз вирусни электрон микроскоп орқали қидира бошладик. HT 2 V—1 га ўхшамаган галати кўринишли заррачалар ўсиб чиқди. Бу янги хил вируслар эди. Лекин улар лимфотин тугунчаларни катталаштиришини ва ОИТСни келтириб чиқаришини исботлашимиз керак бўлди.

Бу масалани ҳал қилиш учун иммунолог, эпидемиолог, вирусолог олимлар ва тиббиёт ходимларидан ташкил топган ишчи гуруҳ тузди. "Бизнинг" вирус ОИТС касаллигига чалинган беморлардан ажратиб олинган эди. Тезлик билан янги вируснинг оксилли таркибий қисмларини аниқлай бошладик. Унга қарши антителолар кўпинча лимфоаденопатия синдромида кузатила бошланди. Биз вирусни лимфоаденопатияни кўзгатувчи вирус деб номладик. Ва ниҳоят у Т-ёрдамчи ҳужайраларга ҳужум қилишини исботладик".

1983 йилнинг май ойига келиб Л.Монто-ньюе ва унинг ҳамкасблари Ф.Барре - Синусси ва К.Шермани янги ренгровирус ҳақида хабар бердилар. Бу даврда яширинча тадқиқот қилаётган америкаликлар бир йил ўтгач, 1984 йилнинг май ойида Р.Галло бошчилигидаги олимлар ОИТС билан касалланган беморлар

лимфоцитларидан юқорида айтилган вирусларни ажратиб олганликлари тўғрисида матбуотда кетма кет мақолалар чоп эта бошладилар. Роберт Галло эсдаликларида: "LAV тўғрисидаги биринчи хабар жуда қизиқарли эди. Гап шундаки, тадқиқотчилар қўллаган усуллар ретровирусларни тўқимада аниқлаган бўлса ҳам, айнан ўхшамаслиги исбот қилинмаган эди. Бундай ҳолни фақат антителолар билан биргина вируснинг ўзи бирикадиганини исбот қилиш мумкин. Бу ҳолни кузатиш учун жуда кўп миқдорда вирус оқсилли, ўз навбатида вирус заррачалари ҳам йиғилган бўлиши керак. Лекин 1983 йилнинг охиригача махсус реагентлар бўлмаганлиги сабабли, ОИТСни кўзгатувчи вирусни ажратиб олиб бўлмади. Кўп изланишлардан кейин М.Сарнгодхареен исмли ходимимиз хасталик билан оғриган 88-100 фоиз беморда вирус борлигини аниқлади. Шу тариқа ОИТСнинг келиб чиқиш сабаблари маълум бўлди. 1984 йилнинг май ойида мен ва ҳамкасбларим бу тўғрида қатор мақолалар орқали хабар бердик".

Бироқ ана шу вақт давомида баъзи баҳслар ҳам келиб чиқди.

Л.Монто-ньюе касаллик кўзгатувчиси вирус эканлигини аниқлагандан кейин Р.Галло Франциялик олимлар билан ёзишма олиб борди. Кейинчалик Монто-ньюе вирус намуналарини жўнатишни ва клонлаштиришга рухсат беришни илтимос

давлат ҳукумат аъзолари ҳам жалб этилди. Шундан бошлаб баҳслар мавзуси ўзгарди, яъни масала илмий томондан устунликда эмас, балки керакли аниқлаш асбобларини баҳолаш ва уни сойтиш устида борар эди. Хуллас, бу ҳақда 1987 йилнинг 30 мартада АҚШ президенти Рональд Рейган ва Франция президенти Франсуа Миттеран келишмовчилик туғилганлиги ҳақида хабар бердилар. Президентлар аралашувидан сўнг кашфиёт тўғрисидаги патент бирданига иккала олимга берилди. Шундай қилиб, баҳсларга нуқта қўйилди.

ОИТС ОЛДИДА АҚШНИНГ КАДДИ БУКИЛДИ

"XXI аср вабоси" АҚШдек қудратли давлатнинг ҳам қаддини букишга қодир эканлиги 90-йиллардаёқ исботланган эди. Бу ҳолни Нобель мукофоти лауреати, микробиолог Девид Балтимор: "ОИТС АҚШ учун давлатлар иштирок этадиган кўп урушларга қараганда хавфлидир, у бутун бир мамлакатни ҳам чархдан ўтказиши мумкин", деганди. Бизнингча, бу фикр ўз-ўзидан пайдо бўлмаган. Чунки АҚШда ОИТСдан зарар кўрган биринчи 10 минг киши томонидан ижтимоий-иқтисодий йўқотиш 6,2 млрд. долларни ташкил қилган. Шу жумладан, 1,4 млрд. доллар касалхонада даволанишга, 8 млрд. доллар бевақт ўлим билан боғлиқ йўқотиш ва беморларнинг ногирон бўлиб қолишига қарши сарф этилган. Хўш, Америка ёки Африканинг жабр тортаётган халқлари бошқа қитъада, дея ўзимизни овути оламизми? Бундай вирусни ташиб юривчилардан холимизми?

ВИРУС ҚАНДАЙ ТАРҚАЛДИ?

Кўпгина олимларнинг таъкидлашича, маймунларнинг баъзи бир турлари, хусусан, яшил маймунлар деб аталадиган мартишқалар вирус ташиб юривчи ҳисобланади. Вирус мана шу ҳайвон аъзоларида яшайди ва кўпаяди. Лекин уларнинг ўзларида касаллик вужудга келмайди. Касаллик Марказий Африка давлатларида кенг тарқалиб, сўнгра ОИТС Гаитига ҳам етиб келган. Шу орқали АҚШ ва Европага ўтган. Шундай қилиб ушбу касаллик ўзининг "салб юриш"ини бошлаган.

31 КИШИДАН 9 ЙИЛДА 779 КИШИГА ЕТДИ

1993 йилнинг 1 мартгача олинган маълумотларга кўра, ОИТС билан зарарланганлар сони республикамизда 31 кишини ташкил этган. Уларнинг 22 нафари чет эл фуқароси бўлиб, ўз ватанларига қайтариб юборилган. 2 киши Россия фуқароси бўлиб юртимизда яшаган. Қолган 7 киши эса мамлакатимиз фуқароси бўлган. 1992 йил 1 нафари вафот этган. Қолган 3 бемор Тошкент шаҳрида ва 2 бемор Фаргона вилоятида истиқомат қилган. Бу қисқа даврда ОИТС республикамизда кўпайди, десак муболага бўлмайди. 2001 йил маълумотларига қараганда, 779 нафар киши аср вабоси билан зарарланиб улгурди. Шулардан 42 нафари чет эллик, 737 киши юртимизда яшайди. Худудий ажратадиган бўлсак: Тошкент шаҳрида 309, Андижон вилоятида 4, Бухорода 13, Жиззахда 3, Навоийда 1, Наманганда 13, Самарқандда 11, Сирдарёда 5, Сурхондарёда 31, Қашқадарёда 7, Тошкент вилоятида 240, Фарғонада 19, Хоразмда 7 нафар киши зарарланган.

ОИТСнинг менга хавфи йўқ деб бепарво бўлмайлик! Акс ҳолда бепарволикимиз оқибати жуда ёмон туғши мумкин! Хуллас, мушоҳадани ўзингиз қилинг!

Шерзод АХМАТОВ,
"Ma'rifat" мухбири

Ундан унган
Эҳтиёт бўлинг!
Янги асрда
Эски асрдан
Асрда асрдан
Асрдан асрдан
Бедаво дард
Унган унган

қил-ди. Фран-ликлар ўз тадқиқотла-лари тўғриси-лумотларни бер-ди. Бироқ тижорат мақсадида ишлатилмаслигини шарт қилиб қўйдилар. 1993 йилнинг 5 декабрида Монто-ньюе АҚШнинг патент офиси-га ОИТС вирусини аниқлаган кашфиёти тўғрисидаги гувоҳнома беришини сўради. Лекин шу нарса маълум бўлдики, бир неча ой муқаддам худди шундай гувоҳномага америкалик олимлар томонидан ҳужжатлар тавсия этилиб, патент бошқармасидан рўйхатдан ўтган экан.

НИЗОГА ПРЕЗИДЕНТЛАР ҲАМ БОШ ҚЎШДИ!

ОИТС вирусини аниқлаш учун биринчи коммерсия йиғмалари 1984 йил сотувда пайдо бўлди. Шундан бошлаб Францияликлар ва америкаликлар ўртасида қизгин баҳс бошланди. Чунки патент эгаларига миллион доллар атрофида мукофот ва киши аъзоларида вирус борлигини аниқлаш учун уларга керакли асбоб-ускуналардан фойдаланиш ҳуқуқлари бериларди. Баҳслар кундан-кун авж ола бошлади. Можароларга икки

Тонг отиб, иш вақти бошланди. Аммо ИПСП "Комсо" корхонаси дарвозаси очилмаган. Ишга келганлар ҳайрон. Одатда бу вақтда қоровул дарвозани очиб, одамлар ҳаракатини кузатиб турарди. Бугун эса ҳамон дарвозани очмабди. Нега? Наҳотки, то шу пайтгача ухлаб ётган бўлса?! Йўқ, бундай бўлиши мумкин эмас. Негаки, Николай Казначеев унақа боқибега қоровуллардан эмас. У ўта хушёр, ҳалол ва зийрак эди. Шундай бўлгач, унинг бунақа қуёш чиқиб, иш вақти бошлангунгача ухлайвериши мумкин эмас.

Дарвоза олдида ичкарига кириши лозим бўлган машиналар ҳам бирин-кетин турнақатор бўлиб тўхтаверди. Бироқ, ҳамон дарвоза берк. Ичкаридан қулфланган. Кўнғироқ тугмасини босаверишдан натижа чиқмапти. Тоқати тоқ бўлган ҳайдовчилардан бири — Фударь девордан ошиб ичкарига тушди. Эшик очилганидан сўнг эса кўпчилик қоровулхона сари шовилди. Аммо, афсуски, қоровулхона эгасиз эди. Оломон атроф-теваракни кузата бошлади. Шу пайт нарироқдан кимдир бақирди:

— Ана, қоровул, ерда ётибди!

— Қани, қаерда?
— Ана, ие, қўллари қон-ку!
— Тирикми ўзи?
— Йўқ, ўлибди бечора...
— Уни ўлдириб кетишибди!
— Ким, ким ўлдирибди уни, нега?

Худди шу савол ҳаммани ўйлантириб қўйди.

Николай Казначеевни дафн этишди. Аммо унинг қотилини қидириш иши тўхта қолмади. Кўпчилик, шу жумладан, марҳумнинг умр йўлдоши Антонина ҳам Андрей Олиндан гумонсирашди. Сабаби, унинг отаси Владимир Николай билан биргаликда "Комсо"да ишлаган бўлиб, ўгли Андрейни доимо ўзи билан бирга олиб юрарди. Николай эса унга бир неча бор дакки берган, унга Андрей газаб билан:

— Мени тинч қўй, акс ҳолда ўлдираман, — деб дўқ урганди.

Бундай пайтларда Николайнинг кўнглини ваҳима босар, бу ҳақда оила аъзоларига ҳам гапириб, "Андрей хавфли одам, унинг қўлидан ҳар бало келади", дерди.

Николай билан Андрей ўрталаридаги зиддиятдан бохабар бошқа кишилар ҳам қотилни узоқдан қидирмасликни, балки у Андрейнинг ўзи эканлиги ҳақидаги тахминни тез-тез такрорлашарди. Шу боисдан ҳам у сўроққа тутилди.

— Мен ўша куни Одилжон Автохўжаев ва Алишер Қодировлар билан бирга эдим. Улар иккови уйимизга келишди. Алишер ким билангир телефони-мизда гаплашиб олди. Кейин улар кетишди. Орадан кўп вақт ўтмай бозорга чиқувдим, яна шу иккаласига дуч келиб қолдим. Биргаликда кўча кездик. Соат тунги 2 ларда мен улардан ажралиб, уйимизга кириб кетдим. Мени кўшиларим Ксения ва Рита холалар кўришувди. Уйга

кириб биров телевизор кўрдим-да, ухлаб қолдим. Отам ишлайдиган базага эса ўша куни кирганим йўқ.

Андрейнинг бу сўзлари нақадар ҳақ ёки ноҳақ эканлигини аниқлаш мақсадида Одилжон Автохўжаев сўроққа тутилган эди, у шундай деди:

— Менинг бор-йўғи 2-синф маълумотим бор, холос. Учунчи синфни ўқимай. мактабдан қочганман. Шу-шу ўқиш нима-лигини билмайман. Ўша куни чиндан ҳам мен Алишер билан бирга юрганман. Соат 22 ларда Андрей бизга:

— Юринглар, базага кириб, машиналар бакини очиб бензин хидлаймиз, — деди.

Биз рози бўлдик. Учовлон "Комсо" базасига бордик. Дарвоза қулфлоглиқ эди. Девордан ошиб тушмоқчи бўлдик. Бизга деворнинг қаеридан ошишни Андрей кўрсатди ва ўзи биринчи бўлиб ичкарига тушди. Қоровулнинг ити унга вовулламади. Кейин мен Алишер билан



ўша жойдан ошиб, ичкарига киргандик, бизга ит вовуллаверди. Қарасак, Андрей қоровул билан сўкишиб турган экан. Яқинроқ боргандик, қоровул бизни бўйнимиздан ушлаб:

— Агар бу ердан тезда чиқиб кетмасаларинг ўлдираман, — деб дўқ урди.

Биз Алишер билан ортимизга қайтиб, базадан чиқиб кетдик. Андрей эса ўша жойда қоровул билан қолди. Унинг уйига қачон қайганини билмайман. Эртасига эрталаб Андрейни кўрдим. У:

— Кечаси мен қоровулни ўлдиридим. Бироқ сен ҳам, Алишер ҳам бу ҳақда ҳеч кимга чурқ этма. Агар оғзингдан гуллаб қўйсанг, билиб қўй, икковингни ҳам ўлдираман, деб дўқ урди. Қоровулни Андрей Олин ўлдириган.

Тунда саёқ юрган учовлоннинг учинчиси Алишер Қодиров ҳали вояга етмаганлиги учун ҳам у 21-сонли болалар уйи руҳшуноси Е.Плешанова иштирокида сўроқ қилинди.

— Мен 1998 йилдан буён Одил ва Андрейни танийман. Шундан бери улар билан бирга юраман. Ўша куни Аҳмад Доғиш бозорида ўйнаб юргандим, Одил келиб қолди. Кейин Андрейга рўбарў бўлдик. Учовлон бирга ўйнаб юрдик. Соат 11 ларда Андрейнинг уйига кирдик. Тунги соат 23 ларда Одил билан Андрей "Комсо" базасига

Ma'rifatsiz kishilar

кириб бензин хидлашга таклиф қилишди. Мен рози бўлдим. Шерикларим менга:

— Девордан сен биринчи бўлиб ошиб туш, дейишди. Мен уларнинг айтганини қилдим. Аммо қоровулнинг кучуги қаттиқ вовуллагани, кўрққанимдан қайтиб чикдим.

— У ерда каттакон ит бор экан. Менга еб қўйгудек ташланди.

— Бизга барибир. Кучукдан ҳам кўрқмаймиз, қоровулдан ҳам!

Икковлон шундай дея девордан ошишди. Орадан биров ўтгач, мен ҳам бор-э, таваккал дея девордан ошиб тушдим. Қарасам қоровул Одил билан Андрейни ушлаб турибди. Ногоҳ Одил унинг чангалидан қочиб кутулди. Мен улардан ўн метрлар чамаси узоқда турардим. Қоровул кроват ёнида турарди. Шу пайт Одил ерда ётган арматурани олиб қоровулнинг боши-

ланиб қоровулга ташланишади. Автохўжаев арматура билан рақибни бир неча бор аёвсиз уради. Алишер ҳам бўш келмайди. У уч бор зарб билан уради. Оқибатда қоровул жон таслим қилади.

Суд 1982 йилда туғилган Одил Автохўжаевнинг ёшлигини, илгари судланмаганлигини унинг жиноятга бериладиган жазони енгиллаштирувчи омиллар деб билди. Бироқ унинг бирор жойда ўқимаганлиги ва ишламаётганлиги жазони оғирлаштирувчи омил деб ҳисобланди. Уни 10 йилга озодликдан маҳрум этишга ҳукм қилди. Энди бу ёшгина қотил мазкур жазо муддатини қаттиқ режимдаги колонияда ўтайди. Шунингдек, ҳали вояга етмаган Алишер Қодиров (1988 йилда туғилган) ҳам ёшига муносиб жазосини олди.

Энди дўппини бошдан олиб қўйиб бир мулоҳаза қилайлик. Хўш, бу икки ёш нега қотиллик қилди? Уларнинг бу жирканч жиноятга қўл уришларига нима сабаб бўлди?

Гап шундаки, бу икки ёш деярли мактаб кўрмаган эди. Одил бор-йўғи 2-синфни битирган. Алишер ҳам худди шунга ўхшаш мактабдан қочиб юрган бўлиб, билими паст, тарбия олмаган эди. Билимсизлик, тарбиясизлик эса уларни жаҳолат ботқоғига ботирди. Кўча-кўйда дайдиш, ишламай тишлаш, ичкилигу чекуликка пул тополмай қолишса бензин хидлаш уларнинг одати эди. Табиийки, билим даражаси гоё паст бу кимсалар ёввойисифат турмуш кечирар, ниҳоятда кўпол, очкўз ва раҳм-шафқатдан бегона эдилар. Бас, шундай экан, ўзлари яшаб турган жамият қонун-қоидаларини ҳам англамасдилар. Бир сўз билан айтганда, уларда маърифат ҳам, маънавият ҳам йўқ эди. Оқибатда улар ўз ҳаётларини ўзлари барбод этдилар. Агар бу ёшлар ҳам бошқа тенгдошлари қатори мактабларда ўқиб, устозлардан етарлича сабоқ олганларида, бўш пайтларини кўча-кўйда дайдишу бензин хидлаш билан ўтказмай, китоб мутулаа қилганларида, улар ҳам оқу қоранинг фарқига етиб, лоақал ўз ҳаётларининг порлоқ бўлиши учун ҳаракат қилардилар. Бироқ, минг афсуски, амалда бундай бўлмади. Бу болаларнинг тақдирга ота-оналари, ўқитувчилари, маҳалла-кўйлари ҳам эътиборсиз қарашганлари ташвиш тугдирадиган кишида. Ахир, Одил 2-синфни битириб мактабдан қочиб кетсаю унинг кейинги тақдири билан ҳеч ким қизиқмас-я! Бу қанақаси бўлди? Наҳотки, бу қотил болалар яшаётган Юнусобод туманидаги 13-мавзеда яшовчилар ёшлар тақдирига шу қадар лоқайд қарайдиган бўлиб кетишган бўлса?

Қаҳқоржон СИДДИҚОВ,
Тошкент шаҳар жиноят ишлари бўйича судининг судьяси,
Мурод КАЛОНХОН,
журналист

КУТУБХОНАЧИГА МУАММОЛАНГИЗ ҚАНДАЙ?

Китобхон ҳақида гапирмизу аммо кутубхоначи ҳақида жуда кам эслаймиз. Кутубхона деганда айримлар фақат китоб жавонларию ва китобларни тасаввур қилишади, баъзилар эса кутубхонани жуда "зерикарли жойку" дея киноя билан эслашади. Кимга қанақа... Лекин кутубхонада кутубхоначининг ўрни ҳам алоҳида эканлигини барчамиз биламизми? Сизга айтган китобингизни иложига борица топиб берадиган, сиз учун елиб-югурадиган, ҳатто сиз ахтарган китобингиз топилмай қолса, қаердан излашингизни ҳам айтиб берадиган ўша кутубхоначи эмасми? Кутубхоначилардан жуда кўп нарса талаб қиламиз-зу лекин ўзимиз улар учун нима қила оламиз, нима қиялпимиз? Кутубхонага фақат китоб учун эмас, балки китобдан билим, ақл, фаросат каби олий хислатларни ўқиб ўрганиш учун борамиз. Шундай экан, сизга билим манбаини икки қўллаб тутказадиган кутубхоначига ҳам яхши муомалада бўлиб, "Илтимос" ва "Раҳмат" сўзларини айт-сак ҳар қандай кутубхоначи биз китобхонларга аъло даражада хизмат кўрсатади. Шундай экан замонавий кутубхонага замонавий кутубхоначи ва замонавий китобхон зарур эмасми?

Муяссар АБДУЛЛАЕВА

"Халқ таълими" журнали жамоаси журнал фаолларидан бири Жаҳонгир Болтаева волидаи муҳтарамаси **БОЛТАЕВА САОДАТ** аянинг вафоти муносабати билан чуқур таъзия изҳор этади.

Олий ва ўрта махсус таълим вазирлиги ўрта махсус касб-хунар таълими Маркази жамоаси Бухоро банк иқтисодийёт касб-хунар коллежи директори **МАХМУД ХОЖИЕВ**нинг вафоти муносабати билан марҳумнинг оила аъзоларига ва қариндош уруғларига чуқур ҳамдардлик билдиради.

Чилонзор тумани Халқ таълими бўлими, таълим вафан ходимлари қасаба уюшма кўмитаси тумандаги 89-боллар боғчаси мудираси Гаҳар Холметовага онаси **КАМАРХОН АЯ УМАРОВА**нинг вафот этганлиги муносабати билан ҳамдардлик изҳор қилади.

Ma'rifat

ТАЪСИС ЭТУВЧИЛАР:

Ўзбекистон Халқ таълими вазирлиги,
Ўзбекистон Олий ва ўрта махсус таълим вазирлиги, Таълим ва фан ходимлари қасаба уюшмаси Марказий Кўмитаси.

Бош муҳаррир: Ҳалим САИДОВ

Тахрир ҳайъати: Йўлдош АҲМЕДОВ, Жуманазар БЕКНАЗАРОВ, Икром БҮРИБОЕВ (бош муҳаррир ўринбосари), Шукур ЖОНБОЕВ, Фахриддин КАРИМОВ (масъул котиб), Қурбонбой МАТҚУРБОНОВ, Усмонали МУСАЕВ, Абдусамат РАҲИМОВ (бош муҳаррир ўринбосари), Хулқар ТҮЙМАНОВА, Нурлан УСМОНОВ, Саъдулла ҲАКИМОВ, Ўткир ҲОШИМОВ

Газета Ўзбекистон Республикаси
Давлат Матбуот Кўмитасида
№ 20 рақам билан 12 июнь
1998 йил рўйхатга олинган.

ИНДЕКС: 149, 150. Г-529.
Тиражи 32918 Г. 1 2 3 4 5 6
Ҳажми 4 босма табоқ.
Офсет усулида босилган,
қозғоз бичими А-3

Набатчи муҳаррир:
Хулқар ТҮЙМАНОВА,
Набатчи:
Фаррух БҮТАЕВ.

«Ma'rifat»дан материалларни кўчириб босиш тахририят рухсати билан амалга оширилади шарт.

МАНЗИЛИМИЗ: 700083, Тошкент,
Матбуотчилар кўчаси, 32.

ТЕЛЕФОНЛАР: масъул котиб—136-56-42,
хатлар, мактабгача ва мактабдан ташқари таълим янгиликлари бўлими —136-54-23,
умумий ўрта таълим янгиликлари бўлими,
қасаба йўналтириш ва ўрта махсус таълим янгиликлари бўлими —136-54-03, олий таълим янгиликлари бўлими, реклама ва тарғибот бўлими —136-55-58.

Газета материаллари
«Ma'rifat Madadkor» нашриётида
терилди. Pentium компьютерида
Лилия БИНАШЕВА
ва Милоҳат ТОШОВА
сахифаллади.

«Шарқ» нашриёт-матбаа
акционерлик компанияси
босмақонаси.
Корхона манзили: «Булок Турон»
кўчаси 41-уй

Босишга топшириш вақти—20.00.
Тоширилди — 20.00